महिला सशक्तीकरण, जेण्डर, बदलाव और नेतृत्व

एक प्रशिक्षण मॉडयूल

विशाखा
महिला शिक्षा एवं शोध समिति

UNDP
India

महिला सशक्तीकरण, जेण्डर, बदलाव और नेतृत्व
: एक प्रशिक्षण मॉड्यूल

निर्माण द्वाराः भरत, शबनम

वर्ष : फरवरी, 2010

विशाखा, महिला शिक्षा एवं शोध समिति द्वारा
यू.एन.डी.पी. भारत के लिए निर्मित

सम्पर्कः
विशाखा
9, प्रताप नगर कालोनी, ग्लास फैक्ट्री के पास, टोंक रोड, जयपुर
फोन 0141 2712034, टेलीफैक्स 0141 2703725
ईमेल : info@vishakhawe.org वेब : www.vishakhawe.org

UNDP India

दिल्ली कार्यालय
55, लोदी एस्टेट
नई दिल्ली 03

बनारस कार्यालय
S-11, 4K नवापुरा
सारनाथ बनारस– 07

मॉडयूल के बारे में...

महिला सशक्तता, अपने आप में एक पूर्ण आयाम है। सशक्तता, सामर्थ्य को समझने की प्रक्रिया में नियन्त्रण, अवसर, सहयोग, सम्मान, अधिकार के साथ–साथ खुद को समझना भी एक महत्वपूर्ण पहलू हैं

UNDP-IKEA द्वारा वित्त पोषित महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम के तहत गांव, खण्ड व जिला स्तर पर कार्यरत संस्था कार्यकर्ताओं के साथ महिला सशक्तीकरण के मुद्दे पर संवाद, विचार, मंथन व प्रशिक्षण करने का मौका हमें मिला। इसी प्रयास में हमने एक प्रशिक्षण–मॉडयूल विकसित किया और उसके आधार पर प्रशिक्षणों को क्रियान्वित किया।

इन मॉड्यूल की विषयवस्तु जितनी महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण है इन विषयों को सहज व सरल रुप में आगे बढाना। एक प्रकार से कहें तो चर्चा मे निरन्तर रिफलेक्शन की प्रक्रिया बनाएं रखना, फेसीलिटेटर के हाथ में है।

इस मॉड्यूल को मोटे तौर पर निम्न श्रेणियों में बांट कर देखा जा सकता है।

उद्देश्य – प्रत्येक सत्र या सत्र के समूह से हमारी अपेक्षा क्या है ? हम सत्र का आयोजन क्यों करना चाह रहे हैं को उद्देश्य में लिखा गया है।

कार्यविधि – इस हिस्से में उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए क्या तरीका, कौनसी गतिविधि आयोजित की जा सकती है, को रखा गया है।

मुख्य प्रश्न – इस हिस्से में इस सत्र के दौरान उभरने या संभावित रुप से उभरने वाले प्रश्नों का खुलासा किया गया है। इनको यहां लिखने का मकसद यह भी है कि अगर कोई फैसेलीटेटर सत्र का संचालन अपने तरीके से करना चाहता है तो वह मुख्य प्रश्नों को केन्द्र में रखते हुए इसे नियोजित कर सकता है।

हम मानते हैं कि इन बिन्दुओं पर चर्चा का यही एकमात्र तरीका नहीं है अतः प्रश्नों की मदद से तरीके का चुनाव आसान हो सकता है।

सामग्री – यहां इस सत्र के लिए चाही गई सामग्री का ब्यौरा है।

समय – सत्र में लगने वाला यह संभावित समय है जो सहभागियों की गति और बातचीत के प्रकार के चलते परिवर्तनशील है।

उम्मीद है यह मॉड्यूल जेण्डर, नेतृत्व, बदलाव, प्रेरक का कार्य और भूमिकाओं जैसे मुद्दों पर साझी समझ निर्मित करने में सहायक होगा। आप इसे अलग–अलग तरह से काम में ले सकते हैं। मॉड्यूल पर आए सुझावों को हमारे साथ बांटेंगे तो हमें खुशी होगी।

इस मॉड्यूल निर्माण में हमें विशाखा कार्यकर्ताओं की सीधी मदद मिल पाई किन्तु इसके पीछे ऊर्जा उन हजारों महिलाओं की थी जो खुद के जीवन में परिवर्तन लाकर सामर्थ्य के साथ सशक्तता की ओर बढ़ रही हैं।

UNDP-IKEA, मिर्जापुर, जौनपुर, संत रविदास नगर की संस्थाओं के सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं हो सकता था। हम उनके शुक्रगुजार हैं।

आपके सुझावों की अपेक्षा में।

मॉड्यूल 1 : स्वयं, छवियां व मान्यताएं

सत्र 1 : परिचय व दोस्ती

सत्र 2 : सहभागियों का प्रशिक्षण पूर्व आंकलन

सत्र 3 : स्वयं की पहचान, आत्मछवि व सामाजिक छवि

सत्र 4 : बदलते संदर्भ, बदलती छवियां, भूमिका व व्यवहार

सत्र 5 : छवि, मूल्य व सामाजिक मान्यताएं

सत्र 6 : छवियां, मूल्य व व्यक्तिगत समझ के कारण प्रचलित भेदभाव।

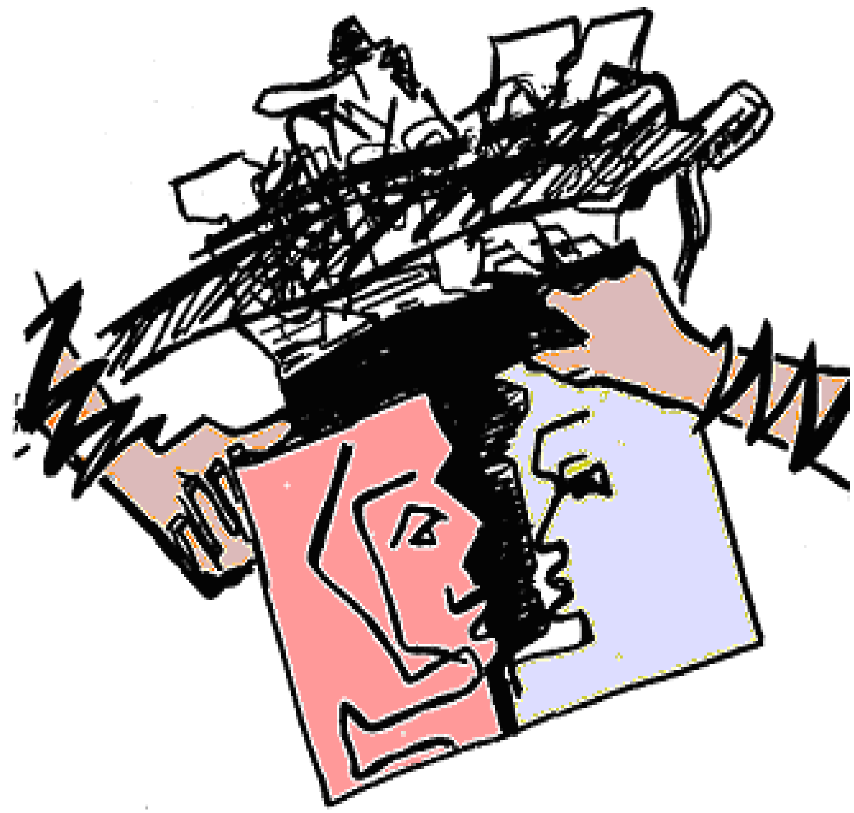

परिचय व दोस्ती

उद्देश्य

- सहभागियों की आपस में झिझक दूर करना।
- एक दूसरे को जानना।
- स्वयं के बारे में बात करने के लिए माहौल निर्मित करना।

सामग्री

कार्डशीट, चार्ट पेपर, मार्कर तैयार किए गए सवाल।

समय

1 घण्टा 30 मिनट

कार्यविधि

- सभी सहभागियों का आपस में परिचय करना (नाम, गांव व एक खूबी)
- सभी सहभागी अपने बारे में एक बात (खूबी) सबको बताएंगे। (प्रशिक्षण दल इन खूबियों को महिला व पुरुष वर्ग के हिसाब से आगामी बातचीत में संदर्भ के लिए चार्ट पेपर पर लिख कर रख लें)

झिझक दूर करने के खेल

खेल 1 : छुपे रूस्तम

इस खेल में सभी सहभागियों के पास एक शीट (सहयोग सामग्री 1) होगी जिसमें कुछ सवाल होंगे जिनके जवाब प्रत्येक सहभागी को पूरे समूह में ढूंढने होंगे।

खेल 2 : वर्गीकरण

इस खेल में संगीत या तालियों की धुन पर सहभागी पूरे कमरे में चारों तरफ घूमते रहेंगे। संगीत रुकते ही खिलाने वाला व्यक्ति एक निर्देश (सहयोग सामग्री 2) देगा। सहभागी उसके अनुसार क्रिया करेंगे। फिर संगीत शुरू होगा लोग चलते रहेगे।

खेल 3 : कितने भई कितने

इस खेल में गोले में सभी सहभागी ताली बजाकर चलेंगे। खेल खिलाने वाला एक व्यक्ति बीच में होगा और पूछेगा 'कितने भई कितने'। गोले में चल रहे व्यक्ति कहेंगे :आप कहें जितने'। फिर बीच वाला व्यक्ति एक संख्या बोलेगा। बोली गई संख्या के हिसाब से सभी सहभागियों को समूह बनाने होंगे। बचे हुए सहभागी खेल से बाहर हो जाएंगे। खेल का क्रम इसी प्रकार चलता रहेगा।

गतिविधि

सभी सहभागी जोड़े बनाकर एक दूसरे के बारे में गहराई से बातचीत करेंगे।

सहयोग सामग्री 1

- सबसे ज्यादा भाषा जानने वाले लोगों के नाम
- घुड़सवारी किसको आती है।
- सिनेमा हाल में पिक्चर सबसे ज्यादा किसने देखी।
- सामाजिक क्षे. में 7 साल से अधिक का कार्यानुभव रखने वाला व्यक्ति।
- राज्य स्तरीय खेल में भाग लेने वाले व्यक्ति।
- तैराकी किन–किनको आती है।
- जो गाना गाते हैं।
- पशु का दूध निकालना किन–किन को आता है।

सहयोग सामग्री 2

- 30 साल की उम्र के व्यक्ति।
- स्नातक से अधिक शैक्षिक योग्यता।
- विवाहित व्यक्ति।
- जिनकी मां नौकरी करती है।
- जिनके बेटियां हैं।
- जिन्होने पहले वाराणसी देखा है।
- जो कभी किसी बड़े अधिकारी से मिले हैं।
- जिन महिलाओं ने अकेले यात्रा की है।
- जिन्होने अपनी मर्जी से शादी की है।
- जो दो पहिया वाहन चालना जानते हैं।
- जो लोग खाना बनाना जानते है।

सहभागियों का प्रशिक्षण पूर्व आंकलन

उद्देश्य

- सहभागियों की प्रशिक्षण से पूर्व जेण्डर, सशक्तीकरण, विकास व नेतृत्व जैसे बिन्दुओं पर समझ को आंकना।

सामग्री

प्रपत्र

समय

30 मिनट

कार्यविधि

इस सत्र में सभी सहभागियों से पूर्व में तैयार किए गए प्रपत्र भरवाए जाएंगे। (परिशिष्ट1)

प्रशिक्षण पूर्व आंकलन
मेरी समझ

नाम : .... ब्लॉक : ....

जिला : .... संस्था : .... दिनांक : ....

अभ्यास

1. एक गांव में मनोहरी बाई अपने दो बच्चों के साथ रहती है। वह मजदूरी करके अपना व बच्चों को पेट भरती है। उसकी 12 साल की बेटी घर का काम करती है। 11 साल का लड़का 5 वीं कक्षा में पढ़ता है। तीनों लोग आराम से जिन्दगी काट रहे हैं।

   इसको पढ़कर आपके मन में क्या विचार आता है ? :

   ....

   ....

2. आपकी समझ के अनुसार नीचे दिये गये वाक्य सही हैं या गलत। सही (✓) या गलत (X) का निशान लगाइये –

- जेण्डर एक सामाजिक भेद है इसे बदला जा सकता है। (   )
- महिलाओं को पुरुषों की देखरेख में घर से बाहर निकलना चाहिए। (   )
- महिलाओं को परिवार के निर्णय लेने की स्वतंत्रता होनी चाहिए। (   )
- बाहर के काम घर के काम से ज्यादा जिम्मेदारी के है। (   )
- जिन्दगी में आगे बढ़ने के मौको का महिलाएं हमेशा फायदा उठा पाती है। (   )
- शादी न करने वाली औरतों का चरित्र खराब होता है। (   )
- लड़के लड़कियों को अपनी मर्जी से शादी करने की छूट होनी चाहिए। (   )
- औरतों के मुकाबले मर्दो को ज्यादा पोषक खाना खाने की जरूरत होती है। (   )

3. महिलाओं को बराबरी का दर्जा कहां से मिलता है –

(A) समाज से (B) संविधान से (C) धर्म से (D) बाजार व्यवस्था से ( )

4. मैं समाज की मान्यताओं को सवाल –

A) मैं समाज की मान्यताओं को सवाल नहीं करती/करता क्योंकि मैं उनको पसन्द करता हूं।

B) मैं समाज की मान्यताओं को सवाल नहीं करती/करता क्योंकि मैं समाज का हिस्सा हूं।

C) मैं समाज की मान्यताओं को सवाल करना चाहती/चाहता हूं ताकि मैं उनको बेहतर ढंग से समझ सकूं।

D) मैं समाज की मान्यताओं को सवाल करने का अधिकार किसी को भी नहीं देती/देता क्योंकि समाज हम सब से बड़ा है।
( )

5. मेरे समाज के तौर तरीके, रीति रिवाज, मान्यताएं

(A) मेरे समाज के तौर तरीके, रीति रिवाज, मान्यताएं बेहतर हैं क्योंकि उनको बहुत सोच समझ कर बनाया गया हैं।

(B) मेरे समाज के तौर तरीके, रीति रिवाज, मान्यताएं कम बेहतर हैं क्योंकि उसमें पुरानी घिसी पिटी बातें हैं।

(C) मेरे समाज के तौर तरीके, रीति रिवाज, मान्यताएं मुख्यतः पुरुषों को ध्यान में रखकर बनाई गई हैं।

(D) मेरे समाज के तौर तरीके, रीति रिवाज, मान्यताओं में पुरुषों को कमजोर माना गया है।

6. महिलाओं और पुरुषों के लिए अलग–अलग नियमों का फायदा किसको मिलता है –

(A) महिलाओं को (B) पुरुषों को (C) दोनों को (D) किसी को भी नहीं ( )

7. हमारा समाज –

(A) हमेशा से ऐसा ही था (B) धर्म ने ऐसा बना दिया (C) हमेशा बदलता रहता है (D) पता नहीं ( )

8. निम्न शब्दों को सही कॉलम में भरो – नदी, पहाड, घर, जेण्डर, समाज, जमीन, जाति, लिंग, कबीला, मर्दानगी, रीति–रिवाज, धर्म, नौकर, शादी, समुद्र, ममत्व (ममता), सड़क, कैमरा।

जो बदल सकता है	**जो बदला नहीं जा सकता**	**जिसको हमने बनाया**	**जो हमेशा से था**

9. आपकी समझ के अनुसार निम्न वाक्यों के सामाने सही (✓) या गलत (X) का निशान लगाएं।

- महिलाओं के कपड़े छेड़छाड़ को बढ़ाते हैं। ( )
- औरतें कमजोर होती हैं। ( )
- महिलाओं के यौन व्यवहार पर नियंत्रण होना जरूरी है। ( )
- महिलाओं की पहुंच सब जगहों पर पुरुषों के बराबर होनी चाहिए। ( )
- पुरुषों का महिलाओं के ऊपर पूर्ण अधिकार होना चाहिए। ( )

10. जेण्डर शब्द का अर्थ है –

(A) औरत मर्द का शारीरिक भेद (B) औरत मर्द का सामाजिक भूमिकाओं में भेद

(C) दोनों (D) पता नहीं ( )

11. वाक्यों को पूरा करो –

- सशक्तीकरण .... है। (स्थिति / प्रक्रिया)
- सशक्तीकरण .... को लाता है। (समानता / दिक्कतें / प्रतियोगिता)

12. मैं अपनी बात सबके सामने कहने में महसूस करती / करता हूं

(A) झिझक (B) आसानी (C) अक्षम(D) पता नहीं ( )

स्वयं की पहचान, आत्मछवि व सामाजिक छवि

उद्देश्य

- विभिन्न दृष्टिकोणों व स्वयं के नजरिये से खुद को समझना।
- स्वयं की पहचान निर्मित करने वाले कारकों को समझ पाना।
- आत्म छवि व सामाजिक छवि में सम्बन्ध को समझना।

सामग्री

चार्टशीट, कार्डशीट, शब्द चित्र, मार्कर, स्केच पेन।

समय

2 घण्टे 30 मिनिट

कार्यविधि

गतिविधि 1 : शब्द चित्रों में खुद को ढूंढो।

- इस गतिविधि में सहभागी ऐसा चित्र या शब्द चित्र (सहयोग सामग्री 3) चुनेंगे जो उनके स्वभाव या व्यक्तित्व से मेल खाता हो या जिनके साथ अपने से जुड़ाव महसूस करते हैं।
- महिला व पुरुषों द्वारा चुने गए चित्र/शब्दचित्र को अलग–अलग चिपकाया जाएगा।

गतिविधि 2 : बाहरी दुनिया में मेरी पहचान।

- इस गतिविधि में सहभागी ऐसा चित्र/शब्द चित्र चुनेंगें जो उनकी बाहरी दुनिया में पहचान/छवि से मेल खाता हो।
- दोनों गतिविधियों के आधार पर व्यक्तिगत छवि और सामाजिक छवियों पर सहभागियों से बात करना। सहभागियों से बातचीत करना कि आपने कैसे तय किया कि ये चित्र आपसे मेल खाता है। बाहरी दुनिया आपके बारे में क्या सोचती है ये आपको कैसे पता चला ? बाहरी दुनिया में आपकी छवि व स्वयं की नजर में अपनी छवि में क्या सम्बन्ध है? ये जो छवियां बनीं कैसे बनीं ?

मुख्य प्रश्न

- मैं खुद को कैसे पहचानता हूं।
- मेरी छवि कैसे बनती है।
- मैं अपने बारे में जो सोचती हूं वह मेरे बारे में जो अन्य लोग सोचते हैं उनसे मेल खाता है या नहीं ?
- हां या ना तो कारण क्या है ?
- दूसरों के विचार मेरी आत्मछवि को कैसे प्रभावित करते हैं ?
- जब मैं किसी से बात करता हूं तो व्यक्ति से बात करता हूं या उसकी छवि से।
- समाज द्वारा निर्मित छवि को मैं कैसे आगे बढ़ाता हूं।
- मैं दूसरों की छवि बनाने में कैसे सहयोग करता हूं।

सहयोग सामग्री 3

शेर	कोयल	फूल (विशेष)	दीपक
भालू	चिड़िया	नदी	गुड़िया
गाय	बाज	पहाड़	बॉल (गेन्द)
लोमड़ी	कबूतर	पेड़	कलम
हिरण	हंस	पत्थर	तलवार
खरगोश	सारस	सूरज	बन्दूक
कुत्ता	तोता	चांद	तराजू
गीदड़	मैना	तारे	दीवार
बाघ	गिद्ध	पानी	मोबाइल
चूहा	बगुला	आसमान	सोना
बकरी	छिपकली	हाथी	पारस
उल्लू	गोयरा	भैंस	हीरा
गधा	सुअर	बैल	दूध
घोड़ा	जिराफ	बछड़ा	गिलहरी
कछुआ	सांप	जंगली भैंसा	बिल्ली
छछुन्दर	नेवला	ऊंट	शेरनी
अन्य कोई भी चीज जिसे आप चुनना चाहते हैं वह लिखें।			

बदलते संदर्भ, बदलती छवियां, भूमिका व व्यवहार

उद्देश्य

- छवि निर्माण में संदर्भ (परिवेश) की भूमिका को समझना।
- छवि का अपने जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव को समझना।
- संदर्भ बदलने से भूमिका एवं व्यवहार में छवियों के अनुसार पड़ने वाले फर्क को समझना।

समय

1 घण्टा 30 मिनिट

कार्यविधि

- बातचीत का प्रारंभ खेल से किया जाएगा।
- इस खेल में एक सहभागी को गोले के बीच में बिठाया जाएगा। दूसरे सहभागी को इसे मिट्टी (घड़ा बनाने वाली मिट्टी) मानते हुए इसे किसी आकृति में लाना होगा। धीरे–धीरे मिट्टी की जगह अन्य वस्तुओं, दुपट्टा आदि का उपयोग भी किया जा सकता है।
- इस खेल के उपरान्त एक और खेल खिलाया जायेगा।

रोलप्ले : दो किरदार आपस में बातचीत कर रहे होंगे। तीसरा किरदार आने पर कैसे उनके व्यवहार बदलते हैं समझने की कोशिश की जाएगी।

उदाहरण

- दो दोस्तों की बातचीत में मां के आने पर,
- दो दोस्तों की बातचीत में लड़की के आने पर,,
- दो दोस्तों की बातचीत में पिताजी के आने पर,
- सहकर्मियों की बातचीत में महिलाकर्मी के आने पर।
- मां की बातचीत पर बेटी के साथ, पति के साथ, सास के साथ, काम की जगह पर बॉस के साथ, लौटते वक्त सहेली के साथ।

मुख्य प्रश्न

- मेरी छवि निर्माण में घर और बाहर के लोगों का क्या प्रभाव पड़ता है।
- मेरी जगह, कार्य और स्थिति बदल जाने से छवि पर क्या असर होता है।
- संदर्भ बदलने से मेरी छवि कैसे बदल जाती है।
- मेरे व्यवहार में मेरी भूमिका और मेरी छवि का असर क्या रहता है?
- मेरी छवि नकारात्मक होगी तो मेरा व्यवहार कैसा होगा ?
- मेरी छवि सकारात्मक होगी तो मेरा व्यवहार कैसा होगा ?
- छवि का मेरे आत्मविश्वास, आत्म सम्मान और गरिमा पर क्या प्रभाव पड़ता है।
- मुझे किस प्रकार की छवियां अच्छी लगती हैं।
- अच्छी लगने वाली छवियां, मेरी अपनी पसन्द हैं या मेरी सामाजिक छवि के कारण मैं उन्हें पंसद करता/करती हूं।
- छवि बुरी हो जाने का डर कैसे काम करता है ?

छवि, मूल्य और सामाजिक मान्यताएं

उद्देश्य

- छवियों के पीछे छुपी सामाजिक मान्यताओं को समझाना।

सामग्री

चार्ट, मार्कर, तस्वीर, बोर्ड।

समय

1 घण्टा 15 मिनिट

कार्यविधि

- चित्र दिखाकर या स्थिति दिखाकर दिमाग में उभरने वाली छवि को लिखना।
- किसको कैसा होना चाहिए : इस गतिविधि में सहभागियों को किरदार/पात्र के नाम बताए जाएंगे। सहभागी नाम के आधार पर विशेषताएं बताएंगे।
- चर्चा करना कि पूर्व धारणाएं व छवियां व्यवहार को कैसे प्रभावित करती हैं। प्रायः हम अपनी पूर्व धारणाओं से/पूर्वाग्रहों से अलग नहीं सोचते हैं।
- सभी सहभागियों को अपनी–अपनी जिन्दगी का एक सिद्धान्त बताने के लिए कहा जाएगा जिसको वे हमेशा ध्यान में रखकर चलते हैं।
- चर्चा करना कि बताए गए सिद्धान्त/मान्यता हमारी जिन्दगी में कहां से आए और हमने इन्हे कैसे मान लिया।
- क्या सिद्धान्त हर परिस्थिति में एक जैसे रहते हैं या व्यक्तियों, आर्थिक स्थितियों या सामाजिक स्थितियों के चलते बदल जाते हैं।

मुख्य प्रश्न

- मेरे जीवन के मूल्य क्या हैं ?
- मैं किन बातों पर विश्वास करता हूं।
- मेरे मूल्य और विश्वास में किस प्रकार का संबंध है।
- मेरे मूल्य मेरे हैं या समाज के हैं।
- समाज किन मान्यताओं को मानता है ?
- जिन को समाज मानता है उनको मैं मानता हूं या नहीं ?
- अच्छी छवि होने पर मुझे क्या हासिल हो पाता है।
- मेरी मान्यता, मेरे सिद्धान्त मैंने कैसे तय किये।
- स्थिति बदलने पर सिद्धान्त बदल जाते हैं या नहीं रहते हैं, कारण।
- आदमी और औरत की बुरी छवि में किस प्रकार का फर्क है, क्यों ?

छवियां, मूल्य व व्यक्तिगत समझ के कारण प्रचलित भेदभाव

उद्देश्य

- मान्यताओं और विश्वासों के आधार पर होने वाले भेदभाव को समझना।
- भेदभाव के कारकों को दैनिक व्यवहार में देखना।

सामग्री

केस स्टडी, स्थितियों के विवरण।

समय

30 मिनिट

कार्यविधि

- सहभागियों को रोल प्ले, फिल्म क्लिपिंग, चर्चा के माध्यम से अलग–अलग स्थितियां बताई जाएगी। उन स्थितियों के आधार पर सहभागियों को सम्भावित क्रियाओं/एक्शन/भूमिकाओं को बताना होगा।
- विभिन्न प्रचलित भेदभावों के व्यक्तिगत अनुभवों को एकत्र करके उन पर चर्चा की जाएगी। सभी सहभागियों को ऐसी घटना पूछना कि आपको देखकर फर्क बात समझी हो।

मुख्य प्रश्न

- मेरी मान्यताएं कौनसी है ?
- मेरी मान्यता के सामने दूसरे की मान्यता को कमजोर क्यों मानता हूं।
- अपनी मान्यता को सिद्ध करने के लिए हम क्या क्या करते हैं ?
- जन्म, तिथि, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव मुझमें कहां से आया।
- इस भेदभाव को बनाए रखने के लिए मैं क्या करता हूं ?
- मैं खुद को दूसरे से श्रेष्ठ समझता हूं, क्यों ?
- अगर सब बराबर होंगे तो भेदभाव रह पाएगा क्या ?
- मेरी कौनसी मान्यता मुझे भेदभाव सिखा रही है।

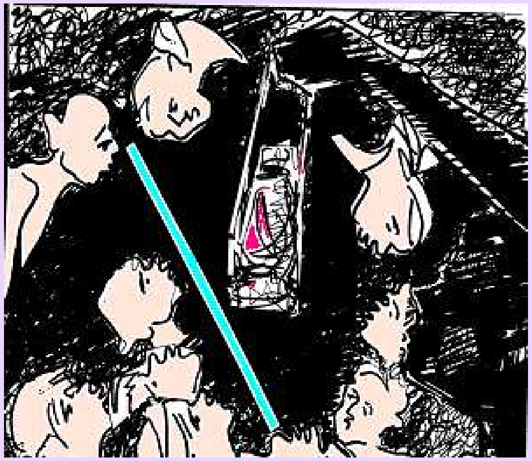

मॉड्यूल 2 : जेण्डर, सामाजिकरण(सोशल कंडीशनिंग) व मानव विकास

सत्र 1 : जेण्डर व सेक्स

सत्र 2 : जेण्डर व सामाजिकरण

सत्र 3 : समाज, सामाजिक व्यवस्था व मानव विकास की यात्रा

सत्र 4 : पितृसत्ता व मर्दानगी

सत्र 5 : जेण्डर व यौनिकता

सत्र 6 : जेण्डर भेद का हमारे जीवन पर असर।

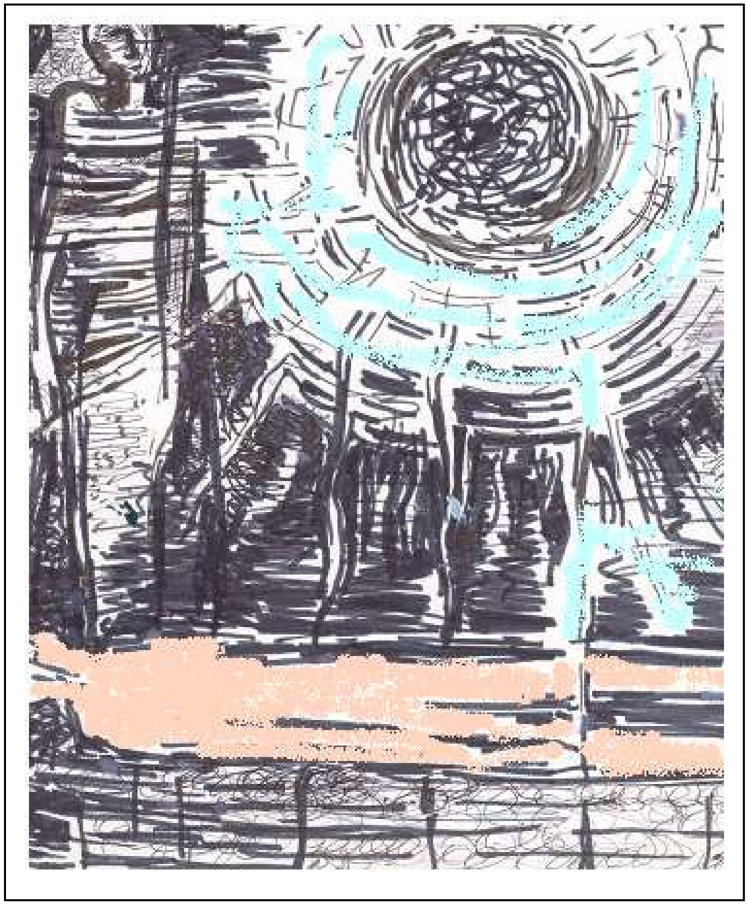

जेण्डर और सेक्स

उद्देश्य

- जेण्डर को समझते हुए जेण्डर व सेक्स के अन्तर को समझाना।
- महिला व पुरुषों की जेण्डर भूमिकाओं को समझना।

सामग्री

चेहरों के चित्र, LCD, चार्ट, मार्कर, रिकॉर्ड शीट

समय

1 घण्टा 30 मिनिट

कार्यविधि

- सहभागियों को कुछ चेहरे व चित्र दिखाए जाएंगे और उनसे पूछा जाएगा कि इनमें से महिला व पुरुष को पहचानने के आधार क्या थे ?
- सहभागियों को स्त्री व पुरुष की विशेषता बताने को कहा जाएगा।
- जेण्डर व लिंग के अन्तर को स्पष्ट करते हुए पावर प्वाईन्ट प्रस्तुतिकरण (संदर्भ सामग्री 1) करना।

अन्य गतिविधियां–1

- कमरे में दो जगहों को चुनकर एक जगह महिला व एक जगह पुरुष चिन्हित किया जाएगा।
- सहभागी को पूछेगे कि यदि आपके पास छूट है तो आप महिला या किस स्थान में जन्म लेना चाहेगे।
- सहभागियों को उसी अनुसार चिन्हित जगह पर जाने के लिए कहेंगे।
- प्रत्येक समूह को महिला/पुरुष की जगह चुनने की वजह बताने के लिए कहा जाएगा।
- यदि इस चर्चा के बाद भी कोई व्यक्ति जगह बदलना चाहे तो बदल सकते हैं।
- महिला व पुरुषों द्वारा चुने गए स्थान के आधार पर उनकी संख्या को लिखना। (सहयोग सामग्री 5)
- महिला व पुरुष को भूमिका, विशेषता व व्यवहार को विश्लेषित करना। (सहयोग सामग्री 6)

अन्य गतिविधियां–2

- सहभागियों से चर्चा करना कि पहले किस उम्र में उन्हें लगा कि वे लड़का या लड़की है। उस समय क्या घटना हुई थी और उन्हें तब क्या महसूस हुआ। (सहयोग सामग्री 7)

मुख्य प्रश्न

- महिला और पुरुष आकृति में भेद को कैसे पहचानते हैं।
- महिला पुरुष भेद को भावनाओं और व्यवहारों के आधार पर कैसे भेद करके देखते हैं ?
- क्या महिलाओं वाली भावनाएं पुरुषों में और पुरुषों वाली भावनाएं महिलाओं में नहीं होती।
- कौनसी सामाजिक भूमिकाएं हैं जो सिर्फ महिला को या सिर्फ पुरुष को निभानी पड़ती है ?
- कौनसे उदाहरण हैं जहां एक जगह पर जो भूमिकाएं हैं दूसरे जगह पर उनसे फर्क भूमिकाएं हैं। (वेशभूषा, खानपान, रीति–रिवाज, दैनिक व्यवहार, मान्यता)

सहयोग सामग्री 5 : लिंग प्राथमिकता अभ्यास

	चुने गए विकल्प	
	महिला	पुरुष
महिला सहभागी (संख्या)		
पुरुष सहभागी (संख्या)		

सहयोग सामग्री 6 :

	महिला	पुरुष
भूमिका		
गुण / विशेष		
व्यवहार		

सहयोग सामग्री 7 : रिकॉर्डशीट

लिंग	उम्र	घटना	स्वयं ने क्या महसूस किया

संदर्भ सामग्री : 1

भला ये जेण्डर क्या है ?

हालांकि अंग्रेजी भाषा के व्याकरण में हम जेण्डर शब्द से परिचित रहे हैं लेकिन अब इस शब्द का इस्तेमाल जाहिर है कि एक दूसरे ही अर्थ में किया जा रहा है। क्या आप यह नया अर्थ समझा सकती हैं ?

जेण्डर शब्द का इस्तेमाल अब सामाजिक अर्थ में या धारणात्मक शब्द के रूप में हो रहा है। इसे अब एक बहुत ही खास अर्थ दे दिया गया है। अपने इस नए रूप में जेण्डर शब्द का अर्थ है औरत तथा मर्द दोनों की सामाजिक व सांस्कृतिक परिभाषा यानि समाज औरत व मर्द को किस तरह से देखता है, उन्हें कैसी भूमिकाएं, अधिकार, संसाधन देता है, उन्हें किस तरह का व्यवहार व मानसिकता सिखाता है।

आजकल जेण्डर शब्द का इस्तेमाल औरतों व मर्दो की जमीनी सामाजिक सच्चाइयों को समझने के लिए, विश्लेषण के एक औजार के रूप में किया जाता है।

औरतों की अधीनता की स्थिति का जिम्मेदार उनके शरीर को मानने के आम सोच से निपटने के लिए ''जेण्डर'' की अवधारणा लाई गई। सदियों से यह माना जाता रहा था कि औरतों तथा मर्दो की चारित्रिक विशेषताएं, उनकी भूमिकाएं और समाज में मिलने वाला अलग दर्जा आदि सब उनकी जैविककीयता या उनके शरीर (यानि उनके सेक्स या लिंग) द्वारा निर्धारित होता हैं अगर मान लें कि अपने शरीर की वजह से स्त्री–पुरुष में अन्तर और ऊंच–नीच है तो स्त्री–पुरुष असमानता सामान्य और प्राकृतिक बन जाती है। उसे दूर करने के लिए कुछ करने की जरूरत भी नहीं समझी जाती। जेण्डर की धारणा के तहत सेक्स या शारीरिक लिंग एक बात है लेकिन जेण्डर बिल्कुल अलग।

हर कोई नर या मादा के रूप में पैदा होता है। हमारी सेक्स की पहचान जननांगों को देखकर ही की जा सकती है। परन्तु हर संस्कृति में लड़के और लड़कियों की अहमियत निर्धारित करने और उन्हें अलग भूमिकाएं, जवाबदारी और विशेषताएं प्रदान करने के अपने तरीके होते हैं। जन्म के समय से ही लड़के और लड़कियों को उनके अलग–अलग रूप में ढालने की जो सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रिया शुरू होती है उसे ''जेण्डरीकरण'' कहा जा सकता है। हर समाज में एक नर या मादा बच्चे को धीरे–धीरे मर्द या औरत के रूप में, उसकी पुरुषोचित या स्त्रियोचित विशेषताओं के साथ विकसित किया जाता है। उनके गुण, व्यवहार के तरीके, भूमिकाएं, जिम्मेदारियां, अधिकार और उम्मीदें भी अलग अलग होती हैं।

सेक्स की पहचान जन्म से जैविकीय रूप से मिलती है परन्तु औरतों तथा मर्दो की जेण्डर पहचान सामाजिक और मनौवैज्ञानिक रूप से मिलती है अर्थात ऐतिहासिक व सांस्कृतिक रूप से तय की जाती है।

इस धारणा का इस्तेमाल करने वाली कुछ नारीवादी विद्वानों में से एक **ऐन ओकली** का कहना है कि **'जेण्डर का सम्बन्ध संस्कृति से है। उसका तात्पर्य उन सामाजिक श्रेणियों से है जिनमें मर्द व औरतें, ''पुरुषोचित'' और ''स्त्रियोचित''** रूप ले लेते हैं। लोग नर हैं या मादा इसका पता शारीरिक प्रमाण से किया जा सकता है लेकिन पुरुषोचित व स्त्रियोचित को इस तरीके से नहीं जांचा जा सकता, उसके मानदण्ड सांस्कृतिक होते हैं जो समय और स्थान के साथ बदलते हैं। सेक्स की स्थिर सच्चाई को स्वीकारना पड़ेगा परन्तु साथ ही जेण्डर की परिवर्तनशील सच्चाई को भी स्वीकारा जाना चाहिए।

अंत में वे कहती हैं – जेण्डर का मूल जैविकता या शरीर में नहीं है तथा सेक्स और जेण्डर के बीच रिश्ता कतई ''प्राकृतिक'' नहीं है।

साभारः कमला भसीन की किताब 'भला ये जेण्डर क्या है' ? से

जेण्डर एवं सेक्स में अन्तर

सेक्स	जेण्डर
सेक्स जैविकीय या शारीरिक है। यानि ऐसा फ़र्क जो औरत व मर्द के जननांगों में और उससे जुड़े प्रजनन कार्यो में साफ दिखाई देता है।	जेण्डर सामाजिक, सांस्कृतिक है। इसका सम्बन्ध पुरुषोचित–स्त्रियोचित गुणों, व्यवहार के तरीक़ों, भूमिकाओं आदि से है।
सेक्स प्रकृति की देन है।	जेण्डर सामाजिक, सांस्कृतिक है तथा मनुष्य ने बताया है।
सेक्स स्थाई है। हर जगह व समय शारीरिक रूप से स्त्री व पुरुष के वही अंग होते हैं।	जेण्डर परिवर्तनशील है। यह समय के साथ, संस्कृति के साथ, यहां तक कि एक परिवार से दूसरे परिवार में बदल सकता है।
सेक्स को बदला नहीं जा सकता।	जेण्डर को बदला जा सकता है।

जेण्डर	सेक्स
जेण्डर सामाजिक परिभाषा व पहचान है।	सेक्स जैविक या शारीरिक है।
जेण्डर सामाजिक, सांस्कृतिक है और इसे मनुष्य ने बनाया है।	सेक्स प्राकृतिक है, इसे मनुष्य ने नहीं बनाया है।
जेण्डर समाज द्वारा बनाया गया है इसलिए यह परिवर्तनशील है। विभिन्न संस्कृतियों या एक परिवार से दूसरे में भी इसका रूप बदल सकता है।	विश्व में हर जगह महिला व पुरुष के शारीरिक अंग एक जैसे ही होते हैं।
जेण्डर को बदला जा सकता है।	सेक्स को बदला नहीं जा सकता।

जेण्डर व सामाजीकरण

उद्देश्य

- सामाजीकरण की प्रक्रिया को समझना।
- सामाजीकरण के स्रोतों को पहचानना।
- परवरिश की प्रक्रियाओं में जेण्डर भेद को समझना।
- जेण्डर भेद के चलते दैनिक व्यवहार को समझना।

सामग्री

चार्ट, स्केच पेन, बोर्ड, मार्कर।

समय

1 घण्टा 15 मिनिट

कार्यविधि

- सहभागियों से घर और बाहर महिला और पुरुष द्वारा किये जाने वाले कार्यो की सूची (सहयोग सामग्री 8) बनवाई जाएगी। सूची बनाने के लिए छोटे समूहों में कार्य किया जाएगा।
- दूसरे अभ्यास में घर और दैनिक जीवन में किस प्रकार के निर्णय लेने की आवश्यकता होती है और कौन निर्णय लेता है को एकत्र किया जाएगा। (सहयोग सामग्री 9)
- इन दोनों अभ्यासों के आधार पर चर्चा करना कि औरतों और पुरुषों के द्वारा किये जाने वाले कार्य के प्रकार और लिये जाने वाले निर्णयों में अन्तर पर बड़े समूह में बातचीत।
- इस अन्तर को समझते हुए यह फर्क कहां से आया, पर विचार एकत्र करना।
- उपरोक्त अभ्यासों के आधार पर समाजीकरण और उनके स्त्रोतों पर बातचीत करना।
- समाजीकरण के स्त्रोत (धर्म, जाति, परिवार, बाजार, स्कूल, समुदाय) महिला व पुरुष में किस–किस प्रकार से फर्क डालते हैं पर छोटे–छोटे नाटक तैयार करना।
- इन नाटकों पर चर्चा करना।
- समाजीकरण के स्त्रोत, महिला और पुरुषों के दैनिक जीवन में अच्छा, बुरा, हमारा, उनका, जायज व नाजायज, सही व गलत को कैसे स्थापित करते हैं।

मुख्य प्रश्न

- मेरे व्यवहार कैसे हों यह कैसे तय होता है।
- मेरे व्यहार कौन तय करता है।
- जाति, परिवार, धर्म मेरे लिए किस प्रकार के नियम तय करते हैं।
- मैं लड़की हूं तो मुझे क्या पहनना है यह कैसे तय हुआ।
- समाज दिखाई नहीं देता फिर भी दबाव डालता है, कैसे ?
- समाज द्वारा दबाव डालने के तरीके क्या हैं ?
- लड़की और लड़के के लिए अलग–अलग नियम किसने तय किये ?
- अलग–अलग नियमों का फायदा किस को अधिक मिलता है।
- किस प्रकार का फायदा मिलता है ?
- घर के काम को कम महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है ?
- बाजार के काम करने वालों व पैसा कमाने वाले को अधिक महत्व क्यों दिया जाता है ?
- जेण्डर भेद के कारण अवसरों पर किस तरह के असर पड़ते हैं ?
- विकास, अवसर और पहुंच की दौड़ में लड़कियां पीछे कैसे छूट जाती हैं ?
- क्या आदमी, औरत विकास की गति के साथ–साथ चल सकते हैं ?

सहयोग सामग्री 8 : दैनिक कार्य विभाजन

क्र. स.	दैनिक कार्य घर और बाहर	कौन करता है		काम का समय
		महिला/लड़कियां	पुरुष/लड़के	
1.				
2.				
3.				
4.				
5.				
6.				
7.				
8.				
9				
10				
12				

सहयोग सामग्री 9.1 : निर्णय कौन लेता है

परिवार, घर में लिए जाने वाले निर्णय के प्रकार	पुरुष / लड़के	महिला / लड़कियां

सहयोग सामग्री 9.2 : निर्णय में महिलाओं की भागीदारी

निर्णय	महिलाओं की भागीदारी निर्णय में		
	जानकारी दी जाती है	राय ली जाती है	पूर्ण सहमति

सहयोग सामग्री 9.3 : संसाधनों पर नियन्त्रण

संसाधन	पहुंच		नियन्त्रण	
	महिला	पुरुष	महिला	पुरुष
जमीन / जायदाद				
घर				
वाहन				
नगद राशि				
खेत				
आय (महिला की)				
आय (पुरुष की)				

संदर्भ सामग्री : 2

सामाजीकरण

हर समाज व्यक्ति को अपने हिसाब से नियंत्रित करने का प्रयास करता है। यह नियंत्रण कभी दिखाई देने वाला होता है तो कभी ऐसा जो दिखाई नहीं देता। समाज, खुद न दिखने वाला किन्तु बहुत तेजी और दबाव के साथ महसूस किये जाने वाला समूह है। प्रत्येक समाज अपने लिए कुछ नियम, कायदे बना लेता है जिनको उस समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वीकारता है। समाज में हर व्यक्ति अपने को छोड़कर दूसरे पर नजर रखता है और समाज के नियमों के अनुरूप कार्य न होने पर दबाव भी डालता है। सामाजिक व्यवस्थाएं इस प्रकार विकसित होती रही है कि बिना किसी आर्थिक मूल्यों को दिये, यह नियत्रंण बना रहता है। यह समाज की ताकत है।

क्या आपने सोचा कि यह सब कैसे हो पाता है ? क्यों हर व्यक्ति समाज के अनुरूप अपने आपको ढाल लेता है। एक और स्थिति को देखने का प्रयास करते हैं –

सीमा रामपुर की रहने वाली है। वह स्कूल की 7 वीं कक्षा में पढ़ती है। सीमा खेल–कूद और पढ़ाई में बहुत होशियार है। वह किसी से नहीं दबती। 8 वीं कक्षा पास करने के बाद उसके मां–बाप उसे घर बैठा लेते हैं। वह उनका विरोध नहीं करती, न ही उसे आगे पढ़ना है, न इसकी बातचीत वह अपने मां–बाप के साथ करती है।

इस स्थिति पर विचार करे। ऐसा क्या हुआ कि एक होशियार और दबंग लड़की पढ़ाई की निरन्तरता न होने पर कोई भी विरोध नहीं करती। क्यों ऐसा होता है कि किसी लड़की के साथ रास्ते में छेड़छाड़ हो जाए तो वह पुरुष के बारे में किसी को भी बताए बिना चुपचाप घर आ जाती है और घटना को भूलने का प्रयास करती रहती है। दोनों स्थितियां सामाजीकरण का परिचय है। जहां यह सर्वमान्य है कि स्कूल न जाना ही लड़की के लिए उपयुक्त है। या छेड़छाड़ होती है तो लड़कियों को चुप रहना चाहिए।

सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जो समाज में रहने वाले व्यक्तियों को समाज के लिए, समाज के द्वारा बनाए गए तरीकों से जीने के लिए प्रेरित/बाध्य करती है। सामाजीकरण बचपन से लेकर हमारे जिन्दा रहने तक, हमारे सोच और व्यवहार का हिस्सा बनकर रहता है।

सामाजीकरण को समझने के लिए इसकी प्रक्रियाओं और सामाजीकरण की संस्थाओं को समझना आवश्यक होगा।

दरअसल अमूर्त दिखने वाला समाज बहुत व्यवस्थित ढंग से समाज के व्यवहारों को निर्धारित करता चला जाता है।

सामाजीकरण का सबसे महत्वपूर्ण घटक है हमारा पालन पोषण। बच्चा अपने पालन पोषण में ही खानपान में फर्क करने जैसी मोटी बातों के साथ–साथ व्यवहार व सोच में अन्तर को महसूस करने लगता है। समाज, सामाजीकरण को नियमित बनाए रखने के लिए परिवार, विद्यालय, धर्म और नैतिकता का सहारा लेता है। पालन–पोषण के दौरान बच्चे अपने मां–बाप के बीच की गैरबराबरी, नियंत्रण के तरीके और छल करने की कला सीख लेते हैं। लड़कों को समझ आ जाता है कि उनको महिलाओं के साथ वैसा ही व्यवहार करना है जैसा उसके पिता और पड़ौसी पुरुष अपने घर में कर रहे हैं। लड़कियां सीख जाती है कि उन्हे कैसे सवालों को चुप रहकर सुनना, पुरुषों के आगे दबना और घर के काम को जिन्दगी का मूल उद्देश्य निर्धारित करना है। लगातार छलपूर्ण संदेश (लड़कियों को अपने पति को परमेश्वर समझना चाहिए) जानकारी तक पहुंच पर रोक और प्रत्येक भूमिका के लिए एक छवि निर्माण महत्वपूर्ण है। ये छवियां सामाजीकरण के कार्य को आसान कर देती हैं।

लड़कियों को घर से बाहर जाना हो तो अपनी उम्र से चौथाई उम्र का पुरुष भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर पाता है। एक पुरुष (किसी भी उम्र का) मात्र के साथ से आसपास और देखने वाले व्यक्तियों की नजर बदल जाती है।

सामाजीकरण जीवन जीने के तरीकों को पक्का करता है। कौन, कैसे जीवन जीएगा पर अपनी पकड़ बनाता है। पालन पोषण, दूसरे के साथ व्यवहार, शिष्टाचार, बातचीत के लिए नियमावली, खाने, उठने, बैठने आदि के तौर तरीके सामाजीकरण से असर में आते हैं। अलग–अलग समाज अपनी पहचान, अपने कार्य की सुविधा के लिए नियम, कानून बनाते और बदलते रहते हैं।

एक और दृष्टि से देखें तो व्यक्ति का व्यवहार पूरी तरह से परिवेश और वातावरण के असर ही नहीं बन जाता। उसके व्यवहार में उसके जीन्स का असर भी होता है। यहीं कारण है कि सामाजीकरण की एक जैसी प्रक्रियाओं को देखने, अपनाने वाले व्यक्ति भी अलग–अलग तरह से व्यवहार करते है।

सामाजीकरण की प्रक्रियाएं समाज के व्यवहार, नियम, मूल्य और मानदण्डों को समझने में मदद करते हैं। मोटे तौर पर देखें तो जेण्डर भूमिकाएं भी सामाजीकरण का एक हिस्सा है। सामाजीकरण से हम भाषा, नियम, व्यवहार, सीखते हुए व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। बेहतर और सफल सामाजीकरण, समाज में एकरूपता लेकर आता है।

विशाखा प्रकाशन 'विचार और विमर्श से साभार

समाज, सामाजिक व्यवस्था और मानव विकास की यात्रा

उद्देश्य

- समाज बनने की प्रक्रियाओं को समझना।
- सामाजिक व्यवस्थाएं कैसे निर्मित हुई उनको समझना।
- मानव विकास की यात्रा में जेण्डर भेद की उत्पत्ति को समझना।

समय

2 घण्टे

कार्यविधि

- वर्तमान में प्रचलित सामाजिक व्यवस्थाओं की शुरूआत कैसे हुई और क्या यह हमेशा से ही ऐसी ही थी इस पर काल्पनिक यात्रा के माध्यम से मानव विकास को समझना। इस यात्रा के दौरान समूह में रहना, शिक्षा, महिलाओं की स्थिति, यौनिकता, समाज, शादी, धर्म आदि को समझना।

मुख्य प्रश्न

- क्या हमारा समाज हमेशा से एक जैसा रहा है या किसी प्रकार के परिवर्तन आए हैं।
- क्या ये परिवर्तन अपने आप आए हैं ?
- प्रारंभ से अब तक की मानव विकास यात्रा में, मैं राज्य परिवर्तन किन को मानता हूं।
- शिक्षा, स्कूल, कबीले, समाज, शादी, कायदे–कानून, सम्प्रदाय कैसे निर्मित हुए।
- मानव शक्ति और प्रजनन नियंत्रण की भूमिका, समाज निर्माण में किस प्रकार रही होगी।
- मैं जिस समाज को मानता हूं उसकी क्या बातें अच्छी लगती हैं ? क्यों।
- मेरे समाज की क्या बातें खराब लगती हैं क्यों ?

पितृसत्ता और मर्दानगी

उद्देश्य

- पितृसत्ता के बारे में समझ विकसित करना।
- मर्दानगी व उससे जुड़े व्यवहारों को समझना।

सामग्री

चार्ट, मार्कर

समय

01.30 घण्टा

कार्यविधि

- समाज में प्रचलित मर्दानगी के उदाहरणों को एकत्र करना।
- एकत्र उदाहरणों पर चर्चा करना।
- उदाहरणों से मर्दानगी के संदर्भ में निकले गुण, अवगुणों को महिला स्थिति के साथ तुलनात्मक दृष्टि से देखना।
- मर्दानगी और पितृसत्ता में किस प्रकार का जुड़ाव दिखाई देता है पर विमर्श।
- पितृसत्ता पर सामूहिक वाचन करना (संदर्भ सामग्री 3)

मुख्य प्रश्न

- मर्दानगी शब्द किससे बनता है ?
- मर्द के क्या खास गुण होते हैं ?
- मर्दानगी जन्म से होती है या बाद में बनती है ?
- मर्दानगी और नारीत्व में क्या अन्तर देखते हैं ?
- औरतों में क्या ताकत होती है ?
- सत्ता पुरुषों के हाथ में न आती/न होती तो क्या फर्क पड़ता।
- दैनिक जीवन में निर्णय में पितृसत्ता कैसे फर्क डालती है ?
- क्या सत्ता को बांटा जा सकता है ?
- महिलाएं निर्णय की प्रक्रिया में शामिल होगी तो किस प्रकार के फर्क आएंगे ?
- क्या महिलाओं को निर्णय में शामिल करना चाहिए, क्यों ?
- मर्दानगी के उदाहरण सभी जगहों पर एक जैसे रहते हैं या बदलते रहते हैं ?
- सम्पूर्ण पुरुष नहीं है जो .... ?

संदर्भ सामग्री 3

पितृसत्ता क्या है ?

प्रश्न : पितृसत्ता से हमारा क्या मतलब है ?

उत्तर : पितृसत्ता का शाब्दिक अर्थ है पिता या कुलपति (परिवार का बुजुर्ग पुरुष) की सत्ता या शासन। आरंभ में इस शब्द का इस्तेमाल एक खास तरह के 'पुरुष प्रधान परिवार' के लिए किया जाता था। यह एक बड़ा संयुक्त परिवार होता था, जिसका सर्वेसर्वा एक बुजुर्ग पुरुष होता था। इस परिवार में इस कुलपति के नीचे औरते, छोटे मर्द, बच्चे, दास, घरेलू नौकर सभी होते थे। आजकल इस शब्द का इस्तेमाल आमतौर पर पुरुष सत्ता दर्शाने या उन शक्ति संबंधों को बताने के लिए, जिनमें मर्द औरतों को दबाते हैं या उस व्यवस्था के लिए किया जाता है जो अनेक तरीकों से औरतों को निचले दर्जे पर रखती है। दक्षिण एशिया में हिन्दी भाषा में इसे पितृसत्ता कहते हैं। उर्दू में इसे पिद्रशाही और बंगला में पितृतौन्त्रों कहा जाता है।

हम किसी भी वर्ग की औरतें क्यों न हों हमारी रोजमर्रा की जिन्दगी में हम अनेक तरीकों से अपने गिरे हुए दर्जे को महसूस करती हैं। परिवार, काम की जगह और समाज में हमारे साथ होने वाला भेदभाव, बेकद्री, अपमान, नियंत्रण, शोषण, जुल्म और हिंसा उसके अनेक रूप हैं। इनका छोटा मोटा ब्यौरा हर उदाहरण में भिन्न हो सकता है लेकिन मुख्य कहानी वहीं होती है।

प्रश्न : पितृसत्ता किस तरह से हमारे सामने आती है ? क्या हम उसे अपने जीवन में पहचान सकती हैं ?

उत्तर : जिसने जीवन में जरा भी ऊंच–नीच, पूर्वाग्रह या अस्वीकृति सिर्फ इसलिए पाई है कि वह लड़की या औरत है तो वह इसे पहचान सकती है चाहे यह कितनी ही दबी–ढकी क्यों न हो या वो इस अनुभव को कोई नाम न दे पाए। कार्यशालाओं और प्रशिक्षणों के दौरान जब भी औरतों ने औरत होने के अनुभव बतलाए हैं, वह वास्तव में पितृसत्तात्मक नियंत्रणों के ही विभिन्न रूपों की चर्चा ही होती है। इस बात से मेरी क्या मंशा है यह कुछ मिसालों के जरिए समझा जा सकता है। हर उदाहरण एक खास किस्म के भेदभाव और पितृसत्ता का एक रूप है।

- मैंने सुना है मेरे जन्म पर परिवार वाले बहुत दुखी हुए थे। वे लड़का चाहते थे। **(बेटे को महत्व)**
- मेरे भाइयों को खाना मांगने का हक है। वे जो चाहते थे हाथ बढ़ा कर उठा लेते थे। हमें कहा जाता था जब तक दिया न जाए, इन्तजार करे। हम बहनें और मां बचे–खुचे से काम चला लेती थी। **(भोजन के बंटवारे में लड़कियों पर घरेलू काम का बोझ)**
- स्कूल जा पाना भी एक बड़ी लड़ाई थी। मेरे पिता का ख्याल था कि हम लड़कियों के लिए पढ़ाई की कोई जरूरत नहीं है। **(लड़कियों के लिए पढ़ाई के अवसरों का अभाव)**
- मैं सहेलियों से मिलने या खेलने बाहर नहीं जा सकती थी।
- मेरे भाई कितने भी बजे घर आ सकते हैं लेकिन मुझे अंधेरा पड़ने से पहले लौटना पड़ता है। **(लड़कियों के लिए आजादी और आने जाने की छूट का अभाव)**
- मेरे पिता मेरी मां को कई बार मारते थे। **(पत्नी प्रताड़ना)**
- मेरे भाई तो पिता से भी गए गुजरे हैं। वो नहीं चाहते कि मैं किसी भी लड़के से बात करूं। **(औरतों व लड़कियों पर पुरुष नियंत्रण)**
- मैं अपने अफसर की मांग पूरी करने के लिए तैयार नहीं थी सो नौकरी से निकाल दी गई। **(काम के स्थान पर यौन उत्पीड़न)**

- मेरे पिता की सम्पत्ति में मेरा हिस्सा नहीं है। मेरे पति की सम्पत्ति भी मेरी नहीं है। असल में ऐसा कोई घर नहीं है जिसे मैं अपना कह सकूं। **(औरतों के लिए उत्तराधिकार या सम्पत्ति अधिकार का अभाव)**
- जब भी मेरा पति चाहता है मुझे अपना जिस्म उसे देना पड़ता है। मेरी कोई राय नहीं है। मुझे इस संबंध से डर लगता है, जरा भी अच्छा नहीं लगता। **(औरतों के शरीर और उसकी यौनिकता पर पुरुष नियंत्रण)**
- मैं तो चाहती हूं मेरा पति गर्भ निरोधक इस्तेमाल करे लेकिन उसने मना कर दिया। उसे मुझे भी ऑपरेशन कराने की इजाजत नहीं दी। **(जनन क्षमता पर नियंत्रण या प्रजनन अधिकारों का अभाव)**

जैसे ही हम टुकड़ों में बंटे हुए इन अलग–अलग अनुभवों पर सोच विचार करते हैं तो एक साझी तस्वीर बनती नजर आती है। हमें यह पता चलता है कि हममें से हर एक को किसी न किसी रूप में इस भेदभाव का सामना करना पड़ा है। लड़कों और मर्दो के मुकाबले में लगातार छोटा और गिरा हुआ बताए जाने का अनुभव और अहसास, आत्म–सम्मान, आत्म–महत्व और आत्म–विश्वास को खत्म कर देता है तथा हमारी इच्छाओं, आकांक्षाओं और सपनों के पर काट देता है। अपनी अहमियत जतलाने के लिए उठाए गए हर मजबूत कदम को नारीत्व के खिलाफ मान कर थू–थू की जाती है। ज्यों ही हम पूर्व निश्चित हदों और भूमिकाओं से बाहर निकल कर कुछ नया करना चाहती हैं हमें 'बेशर्म और बेपर्दा' कहा जाता है। ऐसे रिवाज और कायदे जो हमें मर्द से नीचा मानते हैं सभी जगह मौजूद हैं जैसे हमारे परिवारों, सामाजिक संबंधों, धर्म, कानून, पाठशालाओं, स्कूली किताबों, जन–संचार माध्यमों, कारखानों और दफ्तरों में।

जब हम एक दूसरे के अनुभवों को सुनती हैं तो यह समझ में आता है कि यह भेदभाव हमारे साथ इसलिए नहीं हुआ कि हमारी किस्मत खराब थी या ऐसे 'दुष्ट' मर्दो से पाला पड़ा जो औरतों का शोषण और दमन करते हैं। जो व्यवहार किसी न किसी रूप में हर औरत के साथ हो रहा हो वह न तो बदकिस्मती का नतीजा हो सकता है और न ही इक्का–दुक्का दुष्ट मर्दो की कार्रवाई। हमें यह बात भी समझ में आने लगती है कि जो कुछ हमारे साथ हो रहा हैं वह एक 'व्यवस्था' के तहत है। यह व्यवस्था है पुरुष प्रधानता, पुरुष उच्चता और पुरुष नियंत्रण की, इसमें औरत का दर्जा गिरा हुआ, कमजोर और अधिकार हीनता का है।

प्रश्न : क्या पितृसत्ता का स्वरूप हर जगह एक जैसा है ?

उत्तर : नहीं, यह हर जगह एक जैसा नहीं होता है। इतिहास के अलग–अलग कालों में, विभिन्न समाजों या उसी समाज के विभिन्न वर्गो में इसका रूप भिन्न हो सकता है व अक्सर होता है। हालांकि मोटी–मोटी विशेषताएं वही रहती हैं। पुरुषों का नियंत्रण तो रहता है परन्तु नियंत्रण का ढंग अलग हो सकता है। उदाहरण के लिए हमारी दादी–नानी के और हमारे पितृसत्ता के अनुभव एक जैसे नहीं है। आदिवासी औरतों व उच्च जाति की हिन्दू औरतों के अनुभव फर्क होते हैं। अमरीका में रहने वाली औरतों व भारत में रहने वाली औरतों के अनुभवों में अन्तर हो सकता है। हर सामाजिक व्यवस्था और ऐतिहासिक युग पितृसत्ता का एक नया रूप सामने लाता है जिसके तहत सामाजिक सांस्कृतिक रिवाजों में फर्क हो सकता है लेकिन जैसा कि हमने पहले भी कहा है कि उसके बुनियादी सिद्धान्त वही रहते हैं औरत का दमन, शोषण और नियंत्रण। इस पर हम बाद में अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे परन्तु इन अन्तरों को पहचानना जरुरी है ताकि हम अपने हालात का बेहतर ढंग से विश्लेषण कर सकें और उनसे निपटने की उचित रणनीति तैयार कर सकें।

प्रश्न : पितृसत्तात्मक व्यवस्था के तहत किन–किन चीजों पर मर्दो का नियंत्रण होता है ?

उत्तर : आमतौर पर औरतों की जिन्दगी के निम्नांकित क्षेत्रों में पितृसत्तात्मक नियंत्रण सबसे ज्यादा दिखलाई पड़ता है –

1. **औरतों की उत्पादन या श्रम शक्ति (Productive of Labour power)**

   मर्द, घर के भीतर औरत द्वारा की जाने वाली मेहनत और घर के बाहर कमाई के लिए की जानी वाली मजदूरी दोनों पर नियंत्रण रखते हैं।

घर के भीतर औरतें परिवार के बच्चों, पतियों तथा अन्य सदस्यों के लिए जीवन भर मेहनत करती रहती हैं। **सिल्विया वैल्बी** इसे 'उत्पादन की पितृसत्तात्मक प्रणाली' का नाम देती हैं। इस के तहत पति तथा परिवार के अन्य सदस्य औरत की मेहनत का फायदा उठाते हैं। वह कहती हैं कि घरेलू औरतें उत्पादन करने वाला वर्ग है और पति फायदा उठाने वाला वर्ग। औरत का चौबीसों घण्टे चलने वाला, उबाऊ काम और कमरतोड़ मेहनत को काम समझा ही नहीं जाता और उसे फिर भी पति पर निर्भर व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।

औरत घर से बाहर जाकर जो नौकरी या मजदूरी करती है उस पर भी मर्द कई ढंग से अपना नियंत्रण रखते हैं। पति अपनी पत्नी को बाहर जाकर कमाने या काम न करने के लिए मजबूर कर सकते हैं। वे चाहें तो थोड़े–थोड़े समय के लिए काम करने दें और उसकी कमाई भी हथिया लें। औरतों को अच्छे वेतन वाली ऊंची नौकरियों से दूर रखा जाता है। आमतौर पर उन्हें अपनी मेहनत का कम मुआवजा मिलता है या ऐसे धन्धे अपनाने पड़ते हैं 'जो घर पर बैठ कर' किए जा सकते हैं। काम का यह ढंग औरत के फायदे का बताया जाता है पर वास्तव में औरत की मेहनत का सबसे ज्यादा शोषण करने वाला ढंग है।

औरत की मेहनत का शोषण और उस पर पुरुषों के नियंत्रण का अर्थ है कि **पितृसत्ता से पुरुषों को भौतिक फायदा होता है। औरतों के गिरे हुए दर्जे से पुरुष वर्ग ठोस आर्थिक लाभ उठाता है। यानि हम यह कह सकते हैं कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था भौतिक फायदे की नींव पर स्थित है।**

2. औरतों की प्रजनन शक्ति (Reproductive Power)

औरतों की प्रजनन शक्ति पर भी पुरुष अपना नियंत्रण रखते हैं। अनेक समाजों में बच्चों की संख्या, उनके जन्म का समय, गर्भ निरोधकों का इस्तेमाल जैसे औरत से ताल्लुक रखने वाले बुनियादी मुद्दों का फैसला भी खुद उनके हाथ में नहीं होता। व्यक्तिगत रूप से तो मर्द अपने परिवार की औरतों पर काबू रखते ही हैं, धार्मिक संस्थाएं और सरकार (धर्म और राजनीति) भी औरतों की प्रजनन शक्ति से जुड़े कायदे–कानून बनाती हैं। मिसाल के लिए स्त्रियों व पुरुषों को गर्भ निरोधकों का इस्तेमाल करना चाहिए या नहीं, कौन से गर्भ निरोधक तरीकों की इजाजत दी जा सकती है, औरतें अनचाहे गर्भ को रखें या गिराएं जैसे विषयों का फैसला कैथोलिक चर्च के पुरुष अधिकारियों के हाथ में है। **यह नियंत्रण संस्थागत रूप है।** औरतें कब और कितने बच्चे पैदा करें या बिल्कुल न करे इसका फैसला खुद कर पाने की आजादी के लिए लगभग सारी दुनिया की औरतें लगातार संघर्ष कर रही हैं। इसी बात से साबित हो जाता है कि सरकार और धर्म तथा पुरुषों का यह नियंत्रण कितना कठोर है और ये सभी लोग इस नियंत्रण को छोड़ने को जरा भी तैयार नहीं हैं। ऐसा क्यों है इसकी चर्चा हम अगले भाग में करेंगे।

आज के आधुनिक समय में **पितृसत्तात्मक सरकारें** परिवार नियोजन कार्यक्रम के जरिये औरतों के प्रजनन पर अपना नियंत्रण रखने की कोशिश करती हैं। देश की अधिकतम जनसंख्या कितनी हो इसका फैसला सरकार करती है और उसी हिसाब से औरतों को या तो बच्चे ज्यादा पैदा करने के लिए उत्साहित किया जाता है या बच्चे पैदा करने से रोका जाता है। भारत में परिवार छोटा करने के लिए बहुत आक्रामक तरीके से गर्भ निरोधक कार्यक्रम चलाया जा रहा है। मलेशिया में देश की औद्योगिक पैदावार की खपत बढ़ाने के लिए औरतों को ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए उकसाया जा रहा है।

यूरोप में जन्म–दर बहुत नीची होने के कारण वहां ज्यादा बच्चे पैदा करने के लिए औरतों को तरह–तरह के लालच दिये जा रहे हैं। पूरे खर्चे और वेतन के साथ वहां औरतों को लम्बी प्रसूति छुट्टी दी जाती है, आधे दिन की नौकरियों के अवसर पैदा किए हैं, बच्चों की देखरेख की सुविधाएं दी जा रही हैं। कई देशों में तो पुरुषों को भी बच्चे के जन्म के समय 'पुरुष प्रसूति छुट्टी' देते हैं। देशों की इस संबंध में सोच और नीतियां भी अर्थ–व्यवस्था द्वारा श्रमिकों की मांग के हिसाब से बदलती रहती हैं। मिसाल के लिए दूसरे महायुद्ध के बाद जब हारे हुए जर्मनी में देश निर्माण के लिए श्रम शक्ति की जरूरत थी तो औरतों से कहा गया कि वे घर से बाहर निकल कर नौकरियां करें।

इसके बिल्कुल विपरीत विजेता इंग्लैण्ड में, जहां लड़ाई के दौरान औरतें घर–बाहर दोनों संभाल रही थीं उनसे कहा गया कि वे अच्छी घरेलू औरतें बन कर रहें ताकि युद्ध से लौटे हुए मर्द नौकरियां पा सकें। सन् 1950 के दशक में अमरीका में आई प्रसिद्ध **बालक भरमार** सरकारी नियंत्रण और सरकार द्वारा मातृत्व के सोच को बढ़ाा देने की नीतियों का अच्छा उदाहरण है।

अतिवादी नारीवाद (Radical Feminism)

औरत की स्थिति का विश्लेषण करते समय मातृत्व के इस सोच को केन्द्र बना कर छानबीन करता है। उसके अनुसार औरतों के गिरे हुए दर्जे का मुख्य कारण यही है कि पितृसत्तात्मक समाज में औरत के मातृत्व स्वरूप को बढ़ावा देकर, पालने–पोसने और सेवा करने का सारा बोझ सिर्फ औरत पर डाल दिया जाता है। औरतों को गर्भनिरोधकों के बारे में सही जानकारी मुहैया न करवा कर या बाजार में सिर्फ ऐसे गर्भ निरोधकों की भरमार करके जो मंहगे, खतरनाक, अविश्वसनीय और इस्तेमाल में कठिन हों, ऐसे हालात पैदा कर दिए जाते हैं कि औरतों के पास सिवाए बच्चे पैदा करने के कोई चारा नहीं रह जाता। इस तरह से मातृत्व उन पर थोप दिया जाता है। पितृसत्ता गर्भपात की सीमाएं तय करती है या उस पर पूरी रोक भी लगाती हैं लेकिन साथ ही पुरुषों से शारीरिक संबंध स्थापित करने के लिए उन पर लगातार कड़ा दबाव बना रहता है। यानि चित भी उनकी और पट भी उनकी।

पितृसत्ता औरतों को सिर्फ मां बनने के लिए ही मजबूर नहीं करती बल्कि मातृत्व के हालात व उसका स्वरूप भी तय करती है। मातृत्व के इस पूरे सोच को औरत के दमन का आधार माना गया है। इसी सोच के कारण नारीत्व और पुरुषत्व के दो रूप बनते हैं, उनकी अलग–अलग खूबियां तय होती है, जो पितृसत्ता को चलाने में मददगार हैं। यही सोच पारिवारिक और सार्वजनिक क्षेत्रों को अलग कर उनके बीच दीवार खड़ी करती है। औरत के आने जाने की आजादी व विकास पर रोक लगाती है तथा पुरुष प्रभुत्व को मजबूत करती है।

3. औरत की यौनिकता (Sexuality)

औरत की यौनिकता पर भी पुरुष नियंत्रण है। औरतों की गिरी हुई स्थिति का यह एक और महत्वपूर्ण क्षेत्र है। पुरुषों की इच्छाओं और जरूरतों के अनुसार औरतों को यौन सुख देना ही चाहिए, ऐसा माना जाता है। लगभग सभी समाजों में शादी के संबंध के बाहर औरत की यौनिकता के लिए कोई जगह नहीं है। उसे रोकने के लिए नैतिक और कानूनी हदें बनाई हैं जबकि मर्दो के कारनामों की तरफ हर कोई आंखें बन्द कर लेता है। इस तस्वीर का एक पहलू यह भी है कि अपने परिवार की औरतों, यानि पत्नी बेटी आदि की यौनिकता बेचने का हक उन्हे है। वे चाहें तो खुद इस्तेमाल करें या दूसरों को इसकी इजाजत दे सकते हैं। बलात्कार अथवा उसकी धमकी के जरिए भी औरत की यौनिकता पर काबू रखा जाता है। इसे और अधिक कारगर बनाने के लिए बलात्कार के साथ 'शर्मिन्दगी' और 'बेइज्जती' का एक बहुत बड़ा मायाजाल तैयार कर दिया गया है। औरतों की यौनिकता को अपने कब्जे में रखने के लिए परिवार के साथ, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक नियम मिल कर उनकी पोशाक, चालढाल और आने जाने पर कड़ी नजर रखते हैं। कहीं भी थोड़ी गफलत होने पर तुरन्त सब तरफ से बंधन और कड़े कर दिए जाते हैं।

एक **अतिवादी नारीवादी (Radical Feminist)** विश्लेषण के अनुसार पितृसत्तात्मक व्यवस्था के अन्तर्गत औरतें न सिर्फ 'माताएं' होती हैं बल्कि वे यौन सेवा करने वाली दासियां भी होती हैं। पितृसत्तात्मक सोच औरत के इन दोनों रूपों यानि माता और यौन वस्तु को दो विरोधी खेमों में रख कर देखता है। इस तरह से पुरुषवादी संस्कृति एक माता के अस्तित्व को छोड़ कर औरत को मुख्य रूप से पुरुष के मौज–मजे का सामान मानती है। शायद हर समाज में बलात्कार मौजूद न हो लेकिन यह पितृसत्ता की एक खास चारित्रिक विशेषता है। नारीवादी विश्लेषण का मानना है कि बलात्कार एक राजनैतिक हथकंडा है, ताकतमंद वर्ग द्वारा ताकतहीन वर्ग को दबाने, उसका दमन करने का साधन है। अतिवादी नारीवादियों के अनुसार संस्थागत वेश्यावृत्ति, अश्लील सामग्री तथा समाज में सिर्फ स्त्री–पुरुष के बीच यौन रिश्तों को स्वीकृति देना, कुछ ऐसे रास्ते हैं जिनके द्वारा पितृसत्ता औरत की यौनिकता पर काबू बनाए रखती है।

4. औरतों की गतिशीलता (Mobility)

औरत की यौनिकता उसके उत्पादन और प्रजनन पर नियंत्रण रखने के लिए जरूरी हैं कि मर्द, औरतों के आने जाने पर नियंत्रण रखें। इसके लिए कई तरीके अपनाए गए हैं। औरतों के लिए पर्दा, घरेलु क्षेत्र तक उनके दायरे की सीमा, उस सीमा को छोड़ने पर रोक, पारिवारिक और

सार्वजनिक दायरों के बीच बड़ा साफ फर्क, स्त्रियों और पुरुषों के बीच कम से कम सम्पर्क आदि सभी बातें अपने ढंग से औरत की आजादी और गतिशीलता पर नियंत्रण करती हैं। इनकी खासियत यही है कि ये एक जेण्डर पर लागू होती हैं दूसरे पर नहीं। ये सभी रोक–टोक नियम कायदे औरतों के लिए हैं मर्दो के लिए नहीं।

5. सम्पत्ति तथा अन्य आर्थिक संसाधन (Property and Other Economic Resource)

ज्यादातर सम्पत्ति तथा अन्य आर्थिक संसाधनों पर मर्दो का नियंत्रण है और आमतौर पर ये एक मर्द से दूसरे मर्द यानि पिता से पुत्र के हाथों में जाते हैं। जहां कहीं औरतों को उत्तराधिकार का कानूनी हक मिला हुआ भी है वहां भी सामाजिक रिवाज, भावनात्मक दबाव, रिश्तों की राजनीति से लेकर साफ–साफ जोर जबरदस्ती का इस्तेमाल करके उन्हें अपने हक वास्तव में पाने से रोका जाता है। कुछ अन्य उदाहरणों में व्यक्तिगत कानून लागू होने से उनके हकों में बढ़त होने के बजाए और कटौती हो जाती है। नतीजा यह है कि लगभग सभी मामलों में औरतें नुकसान में रहती हैं। यह बात संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा जारी आंकड़ों से बहुत स्पष्ट हो जाती है।

''औरतें सारी दुनिया में किए गए काम के घण्टों में 60 % से अधिक का योगदान देती हैं जबकि उन्हें दुनिया की कुल आय का सिर्फ 10 प्रतिशत मिलता है और वे केवल 1 % सम्पत्ति की मालिक हैं।''

साभार : कमला भसीन की किताब 'पितृसत्ता क्या है'

जेण्डर व यौनिकता

उद्देश्य

- यौनिकता को समझना।
- महिलाओं के संदर्भ में प्रजनन पर नियन्त्रण को समझना।
- यौन व्यवहारों व यौन व्यवहार के चयन पर नियन्त्रण को समझना।

सामग्री

संगीत व्यवस्था।

समय

45 मिनिट

कार्यविधि

- सभी सहभागियों के साथ मिलकर बॉडी मूवमेन्ट करवाएं जाएगे। इसके दौरान बीच–बीच में निर्मित किया जाएगा।
- Pause के दौरान कुछ शब्द बोले जाएगे। शब्दों के कारण मन के भीतर उपजने वाले भावों को देखने के लिए प्रेरित किया जाएगा। एक ही शब्द महिला और पुरुषों दोनों पर होने वाले असर को समझने का प्रयास किया जाएगा।
- इस अभ्यास से यौन व्यवहारों पर बातचीत करते हुए यौनिकता पर समझ निर्मित की जाएगी।

मुख्य प्रश्न

- क्या यौन व्यवहार, मूलभूत जरूरत है ?
- किसकी जरूरत है ?
- यौन व्यवहार नियंत्रित होन चाहिए इस पर राय ?
- यह नियंत्रण किसका हो, किस पर हो ?
- यौन व्यवहार में भावनात्मक सम्प्रेषण को कितना महत्व है ?
- यौन व्यवहारों में रंग, उम्र, मोटा पतला जैसे विशेषण को कैसे देखते हैं ?
- महिला यौन व्यवहार/यौनिकता को कैसे इस्तेमाल किया जाता है ?
- महिलाओं की वेशभूषा, यौन व्यवहार पर कैसे फर्क डालती है ?
- शादी की पहचान और यौनिकता का कोई जोड़ है क्या ?

जेण्डर भेद का हमारे जीवन पर असर

उद्देश्य

- जेण्डर भेद के कारण महिला और पुरुष के जीवन के अवसर व पहुंच में फर्क को समझना।
- जेण्डर के विषय पर अब तक हुई बातचीत को समेकित करना।

सामग्री

लेपटॉप, LCD

समय

1 घण्टा

कार्यविधि

प्रशिक्षक पॉवर पॉईन्ट (संदर्भ सामग्री 4) द्वारा प्रस्तुति देंगे।

मुख्य प्रश्न

- महिला व पुरुष में किए जाने वाले फर्क के असर जैसे अवसर, गतिशीलता, स्वतन्त्रता।
- लड़कियों की कम संख्या।

संदर्भ सामग्री : 4

जेण्डर का हमारे दैनिक जीवन पर असर

जेण्डर स्थितियों के कारण

- बच्चों के पालन पोषण में फर्क
- लड़कियों और महिलाओं के अवसरों में फर्क
- लड़कियों और महिलाओं की पहुंच कम
- औरतों और लड़कियों की आवाजाही पर फर्क
- घर और बाहर महिलाओं के नियंत्रण कम
- महिलाओं और लडकियों की निर्णयों में भूमिका नगण्य
- महिलाओं के काम की कीमत कम

पहुंच में फर्क

- अच्छे स्कूल
- राज्य से राष्टीय स्तर के खेल
- नौकरियां (पात्रता)
- दवाखाना
- प्रजनन जानकारी केन्द्रों तक

बच्चों के पालन पोषण में फर्क

- जन्म होने पर जुड़े रीति–रिवाज
- लड़कियों की मां का खान–पान पर ध्यान में कमी
- लड़कियों की सेहत, बीमारी, खाना–पीना और देखभाल में कमी
- लड़कियों को बड़ों का ध्यान और समय कम

अवसरों में फर्क

- पढ़ाई का अवसर कम
- लड़कियों को खेलने के अवसर कम
- बाहरी वातावरण के कम अवसर

नियंत्रण

- घर में खाना
- बाजार में सामान
- बच्चों की फरमाईश पूरा कर पाना
- घर में उपलब्ध संसाधनो पर

आवाजाही

- **घर से** स्कूल
- घर से काम की जगह
- अपने मन पसन्द की जगह पर अपनी मर्जी से जा पाना

महिलाओं का सम्मान

- महिलाओ की इच्छा व प्रतिभा को कम महत्व
- समान काम का असमान वेतन
- काम का मूल्य नहीं
- घरेलू कार्य बिना पैसे का

मॉड्यूल 3 : ताकत, सशक्तीकरण, समानता व समता

सत्र 1 : ताकत और गैर बराबरी

सत्र 2 : सशक्तीकरण और जरूरत

सत्र 3 : जेण्डर की नजर में मेरा गांव

सत्र 4 : प्रशिक्षण पश्चात् आंकलन

ताकत और गैर बराबरी

उद्देश्य

- ताकत व उससे जुड़े स्रोतों के बारे में समझ विकसित करना।
- ताकत के स्वरूप व उसका व्यवहारों पर असर को समझना।
- ताकत/सत्ता के असर को जेण्डर की दृष्टि से समझना।
- गैर बराबरी, समता व समानता को समझना।

सामग्री

बोर्ड, मार्कर, चार्ट पेपर, पेन।

समय

1 घण्टा

कार्यविधि

- सहभागियों के साथ एक गतिविधि करना जिसमें सभी से यह पूछा जायेगा कि ऐसे उदाहरण बताओ जिसमें आपने अपने जीवन में खुद को ताकतवर व सबसे कमजोर महसूस किया हो।
- एकत्र उदाहरणों पर चर्चा करते हुए ताकत के प्रतीक व उनसे जुड़ी ताकतों को लिपिबद्ध करना। (रोल प्ले द्वारा ताकत के उदाहरणों को समझना)।

खेल

- 'पावर वाक' का खेल करवाया जाएगा। जिसमें अलग–अलग स्थितियों पर सहभागियों को एक कदम आगे व एक कदम पीछे चलने को कहा जाएगा। खेल के परिणामों पर सहभागियों से चर्चा की जाएगी।
- ताकत और गैर बराबरी के सम्बन्धों पर चर्चा।
- ताकत के विभिन्न आयामों पर बातचीत करना जैसे पावर विद, पावर आवर, पावर विदिन, पावर टू।

मूल प्रश्न

- ताकतवर कौन ?
- ताकत कहां से आती है ?
- कौन तय करता है कि यही ताकत है ?
- ताकत का उपयोग क्या ?
- ताकत का उपयोग जीवन पर कैसे असर करता है ?
- ताकत, मान्यताओं के बीच अर्न्तसम्बन्ध ?
- ताकत, गैर बराबरी बढ़ाती है या कम करती है?
- क्या बराबरी और सामर्थ्य साथ–साथ चल सकते हैं ?
- सामर्थ्य और ताकत में फर्क है या नहीं, क्या फर्क है ?
- व्यवहारिक है या नहीं ?
- समानता को किन आधारों पर देखा जाना चाहिए।
- समता युक्त माहौल संभव है क्या ?
- समता के साथ जीवन संभव है या नहीं ?

सशक्तीकरण और जरूरत

उद्देश्य

- सशक्तीकरण के अर्थ को समझना।
- सशक्तीकरण की अवधारणा, सशक्तीकरण के घटकों पर समझ विकसित करना।
- महिला सशक्तीकरण की जरूरत को पक्का करना।

सामग्री

चार्ट पेपर, मार्कर, बोर्ड

समय

1 घण्टा 15 मिनिट

कार्यविधि

- सहभागियों से सशक्त महिला एवं पुरुषों के उदाहरण एकत्र किए जाएंगे। (सहयोग सामग्री 11)
- एकत्रित उदाहरणों के आधार पर व्यक्ति क्यों सशक्त है, इस पर बातचीत की जाएगी।
- सहभागियों से अनुभव एवं कल्पना के आधार पर उन बिन्दुओं को उभारने की कोशिश की जाएगी जिससे उपरोक्त व्यक्ति सशक्त हुए।
- सशक्तीकरण की अवधारणा (संदर्भ सामग्री 6) पर पावर पाइन्ट प्रस्तुतिकरण।
- सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक सशक्तीकरण का एक दूसरे से सम्बन्ध किस प्रकार है पर चर्चा।

मुख्य प्रश्न

- सामर्थ्यवान होने के लिए क्या आवश्यक है?
- सामर्थय के स्त्रोत क्या हैं ?
- सशक्तीकरण एकांगी है या बहुआयामी ?
- सशक्तता, प्रतियोगिता, माहौल को बढ़ाती है या कम करती है ? कैसे ?
- सशक्तीकरण की प्रक्रिया क्या है ?
- सशक्तीकरण निरन्तर चलता रहता है ?
- सशक्तीकरण, प्रत्येक व्यक्ति के संदर्भ में फर्क–फर्क प्रकार से होता है ?
- सशक्तीकरण जीवन पर कैसे प्रभाव डालता है ?

सहयोग सामग्री 11 : सशक्तीकरण

सशक्त व्यक्ति के नाम	ये व्यक्ति क्यों सशक्त है	इनमें सशक्तता कैसे आई होगी

संदर्भ सामग्री : 6

सशक्तीकरण

सशक्तीकरण अर्थात शक्ति के साथ होना। शक्ति माने सामर्थ्य, क्षमता, कर पाने का कौशल, सशक्तीकरण एक प्रक्रिया है जो निरन्तर आगे चलती रहती है। जैसे पहिया चलता है, जैसे सीढ़ी दर सीढ़ी हम आगे बढ़ते जाते हैं। जैसे जैसे ऊपर बढ़ते जाते हैं चित्र छोटे मगर सभी तरफ से दिखाई देने लगते हैं। स्थितियों के विभिन्न आयाम, पहलू दिखाई देने लगते हैं।

अलग–अलग व्यक्ति सशक्तीकरण को अलग–अलग तरीके से देखते हैं। सशक्तीकरण एक आन्तरिक प्रक्रिया है जो विश्वास, हिम्मत, समझ, पहल, अहिंसा और सम्मान को एक साथ मिलाने से प्रारंभ होती है। विनम्रता से शुरू होती है। समर्पण से शुरू होती है। सशक्तता ऐसी प्रक्रिया है जो दया, करूणा, बराबरी, समता और सजगता को लेकर आती है। सशक्तीकरण ऐसी स्थिति है जो अप्रभाव को लेकर आती है।

सशक्तीकरण की प्रक्रिया को समझने की दृष्टि से कुछ बिन्दुओं में देखा जा सकता है।

जेण्डर व भेदभाव को समझने की सामर्थ्य

व्यक्ति और उसका व्यक्तित्व – समाज में व्यक्ति और उसका व्यक्तित्व कैसे बनता है, समाज की इसमें क्या भूमिका होती है, अनुवांशिक गुण किस प्रकार असर डालते है जैसी बातों की समझ व्यक्तित्व को समझने की क्षमता विकसित करती है।

महिलाओं, पुरुषों में भेदभाव की स्थितियों का विश्लेषण – महिलाओं और पुरुषों की भूमिकाएं, उनके कार्य व्यहार, उनकी आदतें, भाषा आदि कैसे विकसित होती हैं। किस प्रकार उनमें भेद की स्थितियां निर्मित होती हैं। उनके अर्न्तसम्बन्धों को खोज परख ढंग से विश्लेषण कर पाने की क्षमता सशक्तीकरण की ओर लेकर जाती है।

इच्छाएं, अवसर और समानता

हमारी अपनी इच्छाएं, अपेक्षाएं, छवियां और व्यवहार को समझने का प्रयास करना। अवसरों को समझना, समानता, समता जैसी अवधारणाओं को समझना। महिला, पुरुषों में अवसर की उपलब्धता और फायदा किस को मिल पाता है जैसी स्थितियों को समझना।

मानव विकास और पितृसत्ता

मानव सामाजिक विकास की यात्रा को समझते हुए सामाजीकरण, पितृसत्ता, ताकत और पितृसत्ता के कारणों को समझने का प्रयास करना।

हिंसा के प्रकार और कारण

जीवन जीने के लिए अहिंसा एक तरीका हो सकता है, कुछ स्थितियां हमें हिंसा से रूबरू कराती है। अपने घरों में, आस–पास की स्थितियों के बारे में हिंसा की जरूरत, हिंसा के अर्थ, हिंसा के प्रकार और हिंसा से अहिंसा की ओर जैसी स्थितियों को समझना।

संवैधानिक और मानव अधिकार

प्रत्येक मानव को जीवन लेने के साथ ही प्रकृति से कुछ अधिकार मिल जाते है। अधिकारों को संविधान के मार्फत एक कानूनी दर्जा भी दिया गया है। बहुत बार संविधान, मानव अधिकारों को निर्मित करने या जरूरत के अनुसार नए नियमों को जोड़ने की आवश्यकता होती है। संविधान, अधिकार, स्वयं और समाज की जरूरतों को समझने के लिए निरन्तर जरूरत रहती है।

जानकारी युक्त फैसले

फैसले लेने की जरूरत – प्रत्येक दिन फैसले लेने की जरूरत पड़ती है। हम लेते भी हैं पर क्या हम फैसले को यह हमारा चुनाव है कि दृष्टि से देख पाते हैं। जरूरत को समझने का प्रयास करना। फैसला कौन ले रहा है, फैसला किसके लिए है, उसका असर

इच्छाएं, विकल्पों के चुनाव और फैसले लेने की ताकत के बीच अर्न्तसम्बन्ध

हमारी इच्छा, हमें चुनाव और विकल्पों की तरफ लेकर जाती है। जरूरतों इच्छाओं के साथ विकल्प का होना और विकल्प का न होना हमारे फैसले लेने की ताकत पर किस प्रकार असर डालता है। विकल्प को कैसे निर्मित किया जा सकता है आदि की समझ बनाना।

खुद को तलाशने/समझने के लिए जगह

इच्छाओं, विकल्पों, अवसरों की स्थितियों में खुद को समझना, खुद के चुनावों को समझना और स्थितियों के प्रति खुद की जिम्मेदारी को समझना।

नियंत्रण/अपने द्वारा चुनते हुए

आहार – प्रत्येक वह वस्तु, बात, व्यवहार, इशारे, संवदनाएं, भाषा, बोली, गाली, आंखों से देखी, कानों से सुनी और शरीर द्वारा महसूस की गई स्थितियां हमारा आहार हैं। और प्रत्येक व्यक्ति अपना आहार तय कर सकता है। इसी को समझना और इसे निर्मित करना।

विहार – प्रत्येक दिन के काम काज का प्रकार, काम के घण्टे, काम की पुनरावृत्ति सभी कुछ का मकसद और किसके लिए, उस पर खुद का नियंत्रण बिना किसी को चोट पहुंचाए हुए।

विश्राम – जीवन में आराम की काम से भी अधिक महत्वता है। इसी को समझते हुए नींद, आराम, तनाव की स्थितियां में राहत आदि को समझना।

अपने अधिकार तक पहुंच और उपयोग

सम्मान, व्यक्तिगत स्पेस, आजादी और अधिकार के अन्तर और सम्बन्ध को समझना – खुद की छवियों और जकड़नों से बाहर आते हुए खुद के सम्मान, अपनी जगह, स्पेस, आजादी, अधिकार और अपनी गरिमा की समझ को निर्मित करना।

प्राप्त अधिकारों का उपयोग कर पाना

संविधान, कानून द्वारा प्राप्त अधिकारों का उपयोग कर पाना एक महत्वपूर्ण कारक है।

अपनी आवश्यकतानुसार हक के लिए वातावरण निर्मित करना।

बहुत बार संविधान, प्रत्येक व्यक्ति की जरूरत को शामिल नहीं कर पाता। प्रत्येक व्यक्ति की जरूरत बहुत महत्वपूर्ण हैं अपनी जरूरतों को बिना किसी को आहत किये वैधानिकता दिलाने की प्रक्रिया बहुत महत्वपूर्ण है।

खुद को प्रभावित कर रहे व्यक्ति/व्यक्तियों को चुनौती दे पाना

आमतौर पर जब भी हम प्रभावित होते हैं, औचित्य को खो देते हैं और प्रभावित होना सहज स्वभाव है। जिन व्यक्तियों से हम प्रभावित होते हैं हम उनके जैसा होने की कोशिश करते है और अपनी मौलिकता और निजता को खो देते हैं। प्रभावित करने वाले व्यक्तियों को सवाल कर पाना कठिन मगर सशक्तीकरण की प्रक्रिया का हिस्सा है।

व्यक्ति और समूह की समझ

खुद की सुरक्षा के लिए खुद को बनाये रखने के लिए रणनीति कर पाना – जीवन जीने का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को है और इसके तहत अपनी सुरक्षा और अपने को मूल स्वभाव के साथ सुरक्षित रख पाने की रणनीति आवश्यक है।

खुद को तलाश/समझ पाना

अपने स्वभाव को समझने के प्रयत्न करना – खुद के स्वभाव को समझना, उसके लिए तहर–तरह से माहौल और स्थितियां निर्मित करना जरूरी है।

अपने मन व शरीर के अवरोधों को हटा पाना – शरीर व मन को बीमारी और रूकावटों से दूर रखने का प्रयास कर पाना।

जो नहीं चाहिए उसकी उपेक्षा करते हुए Non Judgmental दृष्टि विकसित कर पाना।

शांतता, आनंद, प्रेम और करूणा को समझ पाना।

मुक्त, आजाद, स्वनिर्भर हो कर उड़ पाना।

विशाखा प्रकाशन 'विचार और विमर्श से साभार

जेण्डर की नजर में मेरा गांव

उद्देश्य

- जेण्डर दृष्टि से कार्यक्षेत्र के गांवों को देखने के लिए किस प्रकार की तैयारी आवश्यक है, को समझना।
- कार्यक्षेत्र की जेण्डर स्थितियों को समझने के लिए विकसित प्रारूपों को समझना।
- कार्यक्षेत्र को जेण्डर की दृष्टि से देखने के लिए आगामी 15 दिन की कार्य योजना बनाना।

सामग्री

लैपटॉप, LCD

समय

40 मिनिट

कार्यविधि

- बड़े समूहों को 3 छोटे समूहों में बांटा जाएगा।
- प्रत्येक समूह को एक दस्तावेज (केस स्टडी, जेण्डर आंकड़े या अखबार की कवर स्टोरी में से एक .....सहयोग सामग्री 12) दिया जाएगा जिसके आधार पर प्रत्येक समूह कुछ आधार विकसित करेगा।
- इन आधारों के लिए प्रारूप विकसित किये जाएंगे।
- प्रारूपों (सहयोग सामग्री 13 से 16) पर चर्चा कर कार्य योजना बनाई जाएगी।

सहयोग सामग्री 13 : जेण्डर विभेद

विषय	पहुंच		अवसर उपयोग किस प्रकार करते हैं		निर्णय निर्णय की भूमिका में कौन हैं	
	M	**F**	**M**	**F**	**M**	**F**
विद्यालय में नामांकन						
▪ सरकारी विद्यालय						
▪ प्राइवेट विद्यालय						
विद्यालय में ठहराव						
नौकरी						
ग्राम पंचायत						
खेती						
घर के निर्णय						
बाजार के निर्णय						
शादी के निर्णय						
प्रजनन के निर्णय						
शरीर पर हक						
सम्पत्ति पर हक						
घर पर हक						
बच्चों पर हक						

सहयोग सामग्री 14 : नेतृत्व

1. गांव में ताकतवर व्यक्तियों का आंकलन ?

क्र. स.	ताकतवर व्यक्ति का नाम	लिंग	ताकतें क्या हैं	ताकत का उपयोग बदलाव के लिए किस प्रकार किया

2. क्या आपके गांव में ऐसी महिलाएं हैं जो नेतृत्व के गुण रखती है ? अगर हां तो –

क्र. स.	महिलाओं के नाम	किस घटना से लगा कि नेतृत्व में वे बेहतर हैं

- उन्होंने नेतृत्व किया इसके कोई उदाहरण है। यदि है तो किस प्रकार के।
- नेतृत्व करने वाली महिलाओं/पुरुषों ने किस प्रकार की परेशानी उठाई।
- नेतृत्व के कारण बदलाव की गति में किस प्रकार का फर्क आया।

सहयोग सामग्री 15 : बदलाव

- गांव की स्थिति पहले और अब

क्र. स.	विषय	तब	अब	बदलाव कैसे आया
1	घर से बाहर निकलना			
2	घूंघट			
3	कामकाज			
4	पढ़ाई			
5	नौकरी			
6	शादी की उम्र			
7	शादी के लिए सहमति			
8	प्राथमिक शिक्षा			
9	अस्पताल जाना			
10	खेती के काम में			

- गांव में बदलाव का एक प्रमुख उदाहरण क्या है ?
- इस बदलाव को कौन लाया, कैसे लाया ?

सहयोग समाग्री 16 : दफ्तरों की प्रक्रियाएं

- पंचायत
- लेखपाल
- ग्राम पंचायत
- जनपद कार्यालय
- आंगनबाड़ी केन्द्र
- सीडीपीओ ऑफिस
- महिला विकास
- पंचायतीराज संस्थान
- पुलिस थाना
- पीएचसी/सीएचसी/जिला अस्पताल
- अपनी संस्था का ढांचा व कार्य प्रक्रियाएं
- अल्प बचत निदेशालय
- अन्य

प्रशिक्षण पश्चात् आंकलन

उद्देश्य

- प्रशिक्षण से बनी सीख के स्तर को जानना।

सामग्री

फॉरमेट

समय

30 मिनट

कार्यविधि

प्रशिक्षण से पूर्व भरे गए प्रपत्रों को सहभागियो द्वारा पुनः भरवाना ताकि प्रशिक्षण से बनी समझ को आंका जा सके

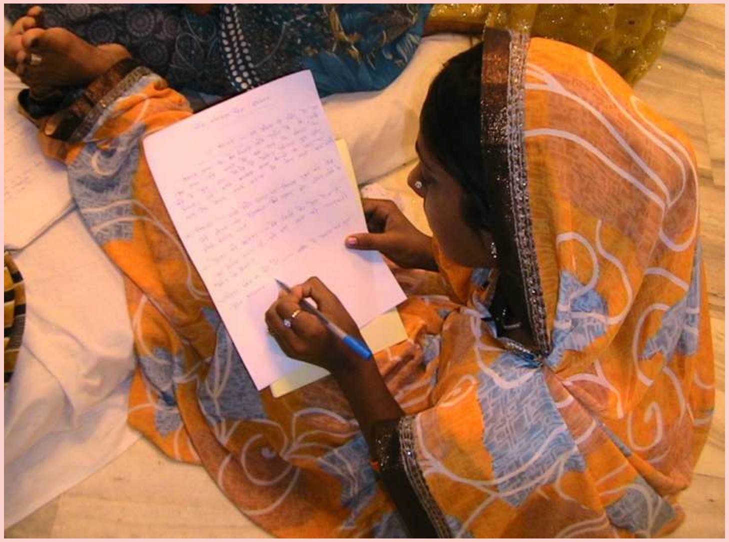

मॉड्यूल 4 : जेण्डर, विकास एवं बदलाव

सत्र 1: फिल्ड अनुभवों को बांटना

सत्र 2: विकास का अर्थ और स्वरूप

सत्र 3: जेण्डर की दृष्टि में विकास

सत्र 4: बदलाव के अर्थ व आवश्यकताएं

सत्र 5: बदलाव का आधार, दिशा और गति

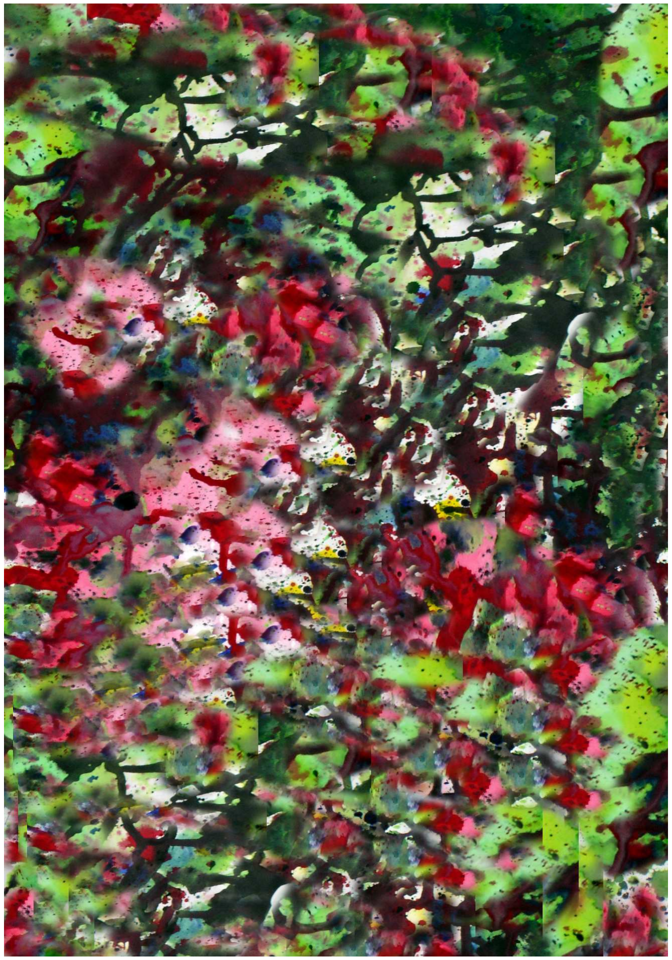

फिल्ड अनुभवों को बांटना

उद्देश्य

- पूर्व में हुए जेण्डर प्रशिक्षण के उपरान्त स्वयं की जिन्दगी पर असर को बांटना
- स्वयं के अनुभवों को व्यक्त करने की क्षमताएं वृद्धि करना।
- विश्लेषणात्मक दृष्टि विकसित करना।
- विकास पर होने वाली बातचीत के लिए मंच तैयार करना।

सामग्री

कार्डशीट, मार्कर, बोर्ड।

समय

2.30 घण्टे

कार्यविधि

- विभिन्न निर्देशित स्थितियों पर अभिनय करते हुए दृश्य निर्मित करना जैसे ट्रेन का दृश्य, मेले का दृश्य, चुनाव, ग्राम सभा, संकट की स्थिति आदि।
- खेल – नेता नेता चाल बदल (आवश्यकता होने पर)
- सभी सहभागी दो प्रशिक्षणों के मध्य अन्तराल के दौरान जेण्डर प्रशिक्षण के असर को बांटेगे।
- सहभागियों को अनुभवों को विकास के साथ जोड़ते हुए बातचीत को आगे बढ़ाया जा सकता है।

मूल प्रश्न

- प्रशिक्षण से खुद में क्या परिवर्तन महसूस किया।
- स्थितियों को देखने की दृष्टि में क्या परिवर्तन महसूस किया।
- वो कौनसे बिन्दु हैं जिन पर पहले सवाल नहीं उठते थे मगर अब उठते है।
- अलग–अलग व्यक्तियों से बातचीत में क्या समझ आया।

विकास का अर्थ और स्वरूप

उद्देश्य

- विकास के अर्थ व स्वरूप को समझते हुए विकास पर समझ निर्मित करना।

सामग्री

बोर्ड मार्कर, चार्टशीट

समय

1 घण्टा 15 मिनिट

कार्यविधि

- प्रत्येक सहभागी फील्ड विजिट के दौरान विकास पर बनी समझ को बड़े समूह के समक्ष बांटेगा।
- प्रशिक्षकों द्वारा अनुभवों को विकास के मानक व सूचकांक के साथ जोड़ना और सहभागियों की प्रस्तुति के आधार पर विकास के अर्थ व स्वरूप पर साझी समझ बनाना।
- बातचीत करते हुए विकास के लिए उपलब्ध मंचों को चिन्हित करना।

मूल प्रश्न

- विकास के अर्थ क्या है ?
- विकास किसके लिए ?
- विकास का फायदा किसको मिलता है।
- विकास और विनाश का सम्बन्ध क्या है?
- विकास में औरतों और आदमियों की दृष्टि को कैसे नियोजित किया जाता है।
- विकास के मानक क्या हो सकते हैं ?
- विकास की गति को किन मंचों की मदद से देखा जा सकता है।
- गांव स्तर पर विकास के मंच कौन–कौन से हैं ?
- विकास में व्यक्ति और समूह को पृथक–पृथक देख पाते हैं या नहीं ?

जेण्डर की दृष्टि में विकास

उद्देश्य

- विकास को पुरुषों व महिलाओं की दृष्टि से समझना।
- विकास व जेण्डर की भूमिकाओं को समझना।
- विकास में महिला दृष्टिकोण की समझ बढ़ाना।

सामग्री

फिल्म Images of Development, चार्ट, मार्कर

समय

1 घण्टा 30 मिनिट

कार्यविधि

- विकास की उपयोगिता पर फिल्म दिखाते हुए चर्चा करना।
- सहभागियों की मदद से दो समूहों में महिला व पुरुषों की नजर से विकास को समझना।
- गांवाई विकास में जेण्डर दृष्टिकोण लाने हेतु छोटे समूहों में चर्चा करना।
- छोटे समूहों की प्रस्तुति के उपरान्त चर्चा को समेकित करना।

मूल प्रश्न

- विकास का उपयोग जन साधारण कैसे करते हैं ?
- विकास में मानव संसाधन को महत्वता किस प्रकार की है ?
- विकास में महिलाओं के मुद्दों को कितनी जगह मिल पाती है।
- महिलाओं के क्या मुद्दे हैं और पुरुषों के क्या मुद्दे हैं ?
- सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं के मुद्दे विकास के मुद्दों से अलग क्यों दिखाई देते हैं ?

बदलाव के अर्थ व आवश्यकताएं

उद्देश्य

- बदलाव के अर्थ व प्रक्रियाओं को समझना।
- बदलाव की आवश्यकता व बदलाव से जीवन पर पड़ने वाले असर को समझना।

सामग्री

बदलाव पर लिखा गया नोट (संदर्भ सामग्री–7)

समय

2 घण्टे

कार्यविधि

- फील्ड विजिट के दौरान बदलाव पर एकत्र उदाहरणों को सुनना।
- चित्रों में बदलाव व विकास की स्थितियों को देखना।
- बदलाव के अर्थ, कैसे आता है, कौन लाता है तथा बदलाव सम्भावनाओं को बढ़ाता है जैसे प्रश्नों पर समझ बढ़ाना।
- बदलाव के उदाहरणों को रेखांकित करते हुए, बदलाव में प्रत्येक व्यक्ति की भूमिका पर चर्चा करना।
- बदलाव की निरन्तरता, बदलाव की गति और दिशा में पहल की उपयोगिता पर बातचीत कर समझ बनाना।

मूल प्रश्न

- बदलाव माने क्या ?
- बदलाव अपने आप होता है या लाया जाता है ?
- क्या हम कुछ ना करें तो बदलाव नहीं आएगा ?
- बदलाव की दिशा और गति कौन तय करता है ?
- बदलाव की दिशा और गति को कम ज्यादा करने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है ?
- बदलाव सकारात्मक या नकारात्मक है, कैसे तय करेंगे।
- बदलाव में व्यक्ति और समूह की भूमिका क्या हो सकती है।
- गांव स्तर पर बदलाव की प्रक्रिया के शामिल व्यक्तियों की भूमिकाओं का विश्लेषण कैसे कर सकते हैं ?
- बदलाव और विकास में क्या सम्बन्ध है।

बदलाव का आधार, दिशा और गति

उद्देश्य

- बदलाव का आधार क्या हो को समझना।
- बदलाव के आधार में संविधान की भूमिका।
- बदलाव की दिशा और गति को बढ़ाने में स्वयं की भूमिका।

सामग्री

चार्ट पेन, फिल्म–गांव नहीं किन्ही पांच का, किताब–हमारे मूलभूत अधिकार।

समय

1 घण्टा

कार्यविधि

- सभी सहभागियों से चर्चा करना कि बदलाव के आधार क्या हो सकते हैं ?
- बदलाव के लिए शिक्षा, जाति, धर्म, वर्ण, संविधान आदि में से किसे आधार बनाया जा सकता है, पर चर्चा करना।
- मानव की आवश्यकताओं और संदर्भ के बदलने से बदलाव की जरूरतों पर पड़ने वाले असर को समझना।
- संविधान व मूलभूत अधिकारों पर फिल्म ''गांव नहीं किन्हीं पांच का'' प्रदर्शित करना व फिल्म पर चर्चा करना।

मूल प्रश्न

- बदलाव किसके लिए ?
- बदलाव का आधार क्या ?
- बदलाव में मानव अवधारणाओं की भूमिका।
- बदलाव भीतरी या बाहरी ?
- बदलाव का असर निरन्तर कैसे रह पाएगा।
- क्या संविधान को बदलाव का आधार बनाया जा सकता है ?
- बदलाव में व्यक्ति आधारित प्रक्रियाओं और सामूहिक प्रक्रियाओं को कैसे देखें?
- बदलाव के लिए अगुवाई हो या नहीं।

मॉड्यूल 5 : नेतृत्व और समूह निर्माण

सत्र 1: नेतृत्व व बदलाव

सत्र 2: प्रेरक की भूमिका

सत्र 3: समूह निर्माण की प्रक्रियाएं और जेण्डर

सत्र 4: महिला सशक्तीकरण (UNDP-IKEA) कार्यक्रम की जानकारी

नेतृत्व व बदलाव

उद्देश्य

- बदलाव के लिए नेतृत्व की आवश्यकता को समझना।
- नेतृत्व के मायने व नेतृत्व के गुणों को समझना।

सामग्री

चार्ट, मार्कर, बोर्ड नेतृत्व पर लिखा गया नोट (संदर्भ सामग्री–8)

समय

2 घण्टे

कार्यविधि

- फील्ड विजिट के दौरान एकत्र नेतृत्वशाली महिलाओं की केस स्टडी को सुनना।
- केस स्टडी और सहभागियों के अनुभव को आधार बनाते हुए नेतृत्व की आवश्यकता पर चर्चा करना।
- नेतृत्व के लिए आवश्यक गुणों पर छोटे समूहों में चर्चा करना।
- स्वयं सहायता समूहों में ऐसी महिलाओं को चिन्हित करना जिसमें नेतृत्व के गुण अन्य महिलाओं की अपेक्षाकृत अधिक स्पष्ट दिखाई देते है।

मूल प्रश्न

- अगुवाई, नेतृत्व की बात करने पर किसका चेहरा दिमाग में आता है।
- क्या महिलाएं अगुवा/नेता हो सकती हैं।
- नेतृत्व के लिए स्थितियां आवश्यक होती हैं या किसी भी स्थिति में नेतृत्व संभव है ?
- नेतृत्व के लिए आवश्यक गुण क्या हो सकते हैं ?
- नेतृत्व के तरीके एक जैसे होंगे या फर्क–फर्क हो सकते हैं ?
- नेतृत्व हमेशा सही होगा ?
- नेतृत्व में व्यक्तिगत हित और सार्वजनिक हित की स्थिति।

संदर्भ सामग्री : 7

बदलाव

अक्सर आपने सुना होगा 'हमारे जमाने में तो ऐसा नहीं था' पहले तो कभी ऐसा नहीं हुआ। हर बुजुर्ग व्यक्ति पिछले जमाने और अभी के जमाने में अन्तर को देखता है और हम सबको सुनाता है।

क्या अपने कभी सोचा है कि यह अन्तर क्या है ? कहां से आया ? किसके करने से यह अन्तर आया।

पहले आदमी कपड़े नहीं पहनते थे, अब पहनते हैं। पहले बैलगाड़ी से चलते थे अब बस और रेल में। पहले जंगल में रहते थे अब घर में। पहले पर्दा नहीं करते थे अब करते है। पहले महिला और पुरुष सभी तरह का काम करते थे अब काम में बंटवारा है। पहले मनोरंजन के लिए नाचना, ढोल बजाना और गाना गाना था अब सिनेमा और रेडियो।

क्या हुआ कि यह बदलाव आया ? क्या अपने आप ? या यह बदलाव हमारे और आपके करने से आया ? हम न चाहे तो बदलाव नहीं आएगा।

समझने की बात है कि हर पल कुछ न कुछ बदल रहा है। बदलाव तो होना ही है। हम कुछ करेंगे तो भी और हम चुपचाप रहेगे तो भी। मौसम बदलेगें, वनों की स्थिति बदलेगी, हमारे आपसी रिश्ते बदलेंगे, समाज बदलेगा। बदलाव तो बिल्कुल वैसे ही है जैसे दिन–रात, हर पल कुछ न कुछ बदल रहा है। बदलाव के बारे में दो बाते हमारे हाथ में है एक है बदलाव की दिशा और दूसरी है बदलाव की गति।

हम सोचते है कि हमारे घर पर बहु–बेटियां पर्दा करेगी तो पर्दा प्रथा चलती रहेगी मगर किसी दूर इलाके की बहु–बेटियों ने इसका विरोध किया। और असर हमारे ऊपर भी पड़ा। हमारे यहां भी पर्दा कम हुआ।

पहले अन्धेरा होते ही सो जाते थे, मगर बिजली ने दिन और रात के फर्क को कम कर दिया। दिन बड़े होने लगे। मुम्बई, दिल्ली जैसे शहरों के बारे में कहते है कि ये 24 घण्टे जगते है। अर्थात 24 घण्टे चहल–पहल बनी रहती है।

बदलाव तो होना ही है मगर महत्वपूर्ण है उसकी दिशा। बदलाव की दिशा हमारे हाथ में है। हम उसे तय करते हैं। पढ़ाई जरूरी लगी तो हमने तय किया सब को स्कूल जाना चाहिए।

एक समय की व्यवस्था रही होगी कि मैला ढ़ोने का कार्य आदमी करें लेकिन आज ऐसी व्यवस्थाएं है कि उनके द्वारा मैला ढ़ोने की जरूरत नहीं है तो फिर क्यों वे ढ़ोए ?

स्थिति / समस्या

↓

देखना

↓

महसूस करना

↓

स्थिति का विश्लेषण

↓

कारणों की तलाश

↓ **प्रयास**

खुद में बदलाव

↓ **समूह**

समान विचार बनाना

↓

सामूहिक चिन्तन

↓ **क्रिया**

स्थिति पर चोट

↓

बदलाव

एक छोटी सी कहानी सुनाता हूं

एक जंगल में एक साधु अपने शिष्यों के साथ रहते थे। उनके पास एक बिल्ली थी। वे जब भी साधना करते थे बिल्ली को अपने पास बैठा लिया करते। एक दिन साधु मर गए। उनकी याद में बिल्ली भी मर गई मगर उनके शिष्य आज भी साधना करते है तो किसी न किसी बिल्ली को वहां बांध कर रखते हैं।

बिल्ली को पकड़े रहने से शिष्य ज्यादा सीख पाएगें ऐसा तो नहीं है मगर स्थितियों को बनाएं रखने के लिए हम कोशिश करते हैं। शिष्य बदल गए। सीखने का तरीका बदल गया। मगर हमने अपने आप को जकड़ रखा है।

यही बात है जो बदलाव के लिए सहायक या बाधा की तरह से काम करती है। बदलाव की दिशा तय करने में बहुत व्यक्तियों का योगदान रहता है। बदलाव की दिशा तय कर उसे गति देने वाले व्यक्तियों को हम अगुवा की तरह देखते हैं। लड़कियां पढ़ जाए, कि बात होगी तो हम सावित्री बाई फुले जैसी महिलाओं को नहीं भूल सकते। अगर किसी को नुकसान पहुंचाए बिना अपनी बात कहने के तरीकों की बात होगी तो गांधी जी को हम नहीं भूल पाएंगे।

बदलाव की दिशा में हमारा योगदान क्या हो यह हमारे हाथ है। हमारे द्वारा किये गए कार्य, हमारी समझ बदलाव में सहायक होती है। हर एक व्यक्ति बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है और जब कई लोग मिलकर एक साथ कोशिश करते हैं तो बदलाव की गति बढ़ जाती है। जो बदलाव अपने आप 10 साल में आता वह हम हमारी कोशिशों से 3 या 5 साल में ले आते हैं। व्यवस्था, सरकार या जो लोग नियंत्रण की भूमिका में होते हैं वे भी बदलाव में बहुमूल्य योगदान देते हैं। हमारा संविधान, सरकारी योजनाएं बदलाव की दिशा को स्पष्ट करता है।

बदलाव एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है। टी. वी., रेड़ियों, समाचार पत्र, अगुवा, सरकार, समूह, संगठन सब बदलाव को गति देते है। जैसे–जैसे तकनीकी अपनी चरम सीमा की ओर बढ़ रही है, बदलाव में उसका महत्वपूर्ण योगदान होता जा रहा है। सम्प्रेषण की गति और साधनों (मोबाइल, इन्टरनेट आदि) ने दूरियां कम कर दी है। बातचीत, विमर्श, सहमति, असहमति के मंचों को बढ़ा दिया है। इससे सामूहिक action's को बल मिल पाया है। देख–रेख की प्रक्रियाओं में जन सामान्य की सहभागिता बढ़ पाई है। इस उपलब्धता ने बदलाव को सहभागिता और सामाजिक न्याय की ओर बढ़ाया है।

स्थिति में परिवर्तन होना ही है तो बेहतर होगा कि हम इस परिवर्तन को अपनी बेहतरी के लिए इस्तेमाल कर पाए। बेहतरी वह जो जीवन स्तर में सुधार ला सके। बदलाव की प्रक्रिया को समझ कर ही उसमें हस्तक्षेप किया जा सकता है।

बदलाव की प्रक्रिया में अपनी स्थिति को देखना, समझना, अपनी जरूरत की पहचान करना, जरूरत की पूर्ति के लिए विकल्पों/तरीकों की खोज करना, अपने लिए उपयुक्त तरीके का इस्तेमाल कर जीवन स्तर को सुधारना शामिल है।

आप अपने जीवन और आस–पास में गौर करके देखेगे तो आप को समझ आयेगा कि बहुत सी स्थितियों में हम बदलाव को तय करते हैं और उसे पाने का प्रयास करते हैं। बहुत से लोग जिनको हम जानते हैं उनकी तारीफ इसलिए करते हैं कि उन्होने अपने लिए कुछ सोचा है, उसके लिए प्रयास किये और पाया। ये वो लोग हैं जो बदलाव को अपने अनुसार बदल पाते हैं। हम सब में यह ताकत है। हम सब बदलाव का रूख बदलने में सक्षम हैं। बस तैयारी इस बात की करनी होगी कि हम बदलाव की गति बढ़ाने के लिए तैयार है। अपनी नजरे दिल और दिमाग खुला रख कर बदलाव को दिशा देने के लिए सहमत है।

विशाखा प्रकाशन 'विचार और विमर्श से साभार

प्रेरक की भूमिका

उद्देश्य

- प्रेरक की अवधारणा को समझना।
- प्ररेक की भूमिका और बदलाव के बीच सम्बन्ध को समझना।

सामग्री

बोर्ड, मार्कर, चार्ट, स्केच पैन।

समय

....

कार्यविधि

- प्रेरक शब्द के अर्थ पर बातचीत करना।
- प्रेरक और प्रेरणा के सम्बन्ध पर चर्चा करते हुए कुछ उदाहरणों को ढूढ़ना जहां कोई दूसरा व्यक्ति हमारे लिए प्रेरणा स्त्रोत बना हो। जहां उसने प्रेरक की भूमिका अदा की हो।
- प्रेरक की भूमिका, उसके गुण, व्यवहार पर चर्चा करते हुए प्रेरक बदलाव में कैसे सहायक होते हैं को सामूहिक रूप से समझना।

मूल प्रश्न

- प्रेरक के अर्थ।
- प्रेरक की भूमिका में कौन हो सकता है।
- प्रेरक के गुण क्या हो सकते हैं।
- प्रेरक, बदलाव में क्या भूमिका निभा सकते हैं।
- प्रेरक का समुदाय के साथ जुड़ाव कैसा हो।
- प्रेरक, जाति, धर्म, शिक्षा, जेण्डर आदि के आधार पर व्यक्तियों को विभाजित करके देखे या नहीं।
- प्रेरक कार्यक्रम के लिए किस प्रकार महत्वपूर्ण है।

समूह निर्माण की प्रक्रियाएं और जेण्डर

उद्देश्य

- समूह निर्माण की प्रक्रियाओं पर समझ बनाना।
- समूह निर्माण पर जेण्डर की दृष्टि से समझ विकसित करना।

सामग्री

नेतृत्व सम्बन्धी फिल्म

समय

1 घण्टा 30 मिनिट

कार्यविधि

- नेतृत्व से समूह निर्माण पर फिल्म प्रदर्शन करना।
- फिल्म पर चर्चा करते हुए समूह निर्माण की आवश्यक प्रक्रियाओं पर चर्चा करना।
- समूह के भीतर बनने वाले समीकरण और आयामों पर चर्चा करना।
- समूह बनाते समय जेण्डर दृष्टि से किन बातों पर सावधानी की जरूरतें हैं, को समझना।

मूल प्रश्न

- व्यक्ति भीड़ और समूह में अन्तर।
- समूह निर्माण के लिए आवश्यक प्रक्रियाएं।
- समूह के बीच अर्न्तनिहित समीकरण।
- समूह बदलाव और विकास में कैसे सहायक होगा।
- समूह की दृष्टि कितनी महत्वपूर्ण।
- समूह जेण्डर निर्माण की प्रक्रियाओं को समझे इसके लिए क्या किया जा सकता है।
- समूह बनाते समय किन बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए।

महिला सशक्तीकरण (UNDP-IKEA) कार्यक्रम की जानकारी

उद्देश्य

- महिला शक्तीकरण कार्यक्रम की जानकारी बांटना।
- कार्यक्रम में सामाजिक सशक्तीकरण के पहलू पर विस्तृत समझ निर्मित करना।

समय

45 मिनिट

कार्यविधि

- प्रशिक्षण में अब तक की गई चर्चाओं को समेकित करते हुए महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम का संदर्भ निर्मित करना।
- सहयोगी संस्था या यूएनडीपी के पदाधिकारियों द्वारा कार्यक्रम की जानकारी देना।

जानकारी पश्चात् सवाल जवाब के लिए खुला सत्र।

मॉड्यूल : 6: जेण्डर दृष्टि से योजना निर्माण

सत्र 1: बदलाव के लिए गांव प्रोफाइल निर्माण

सत्र 2: कार्य योजना निर्माण

सत्र 3: सामूहिक ऊर्जा का महत्व

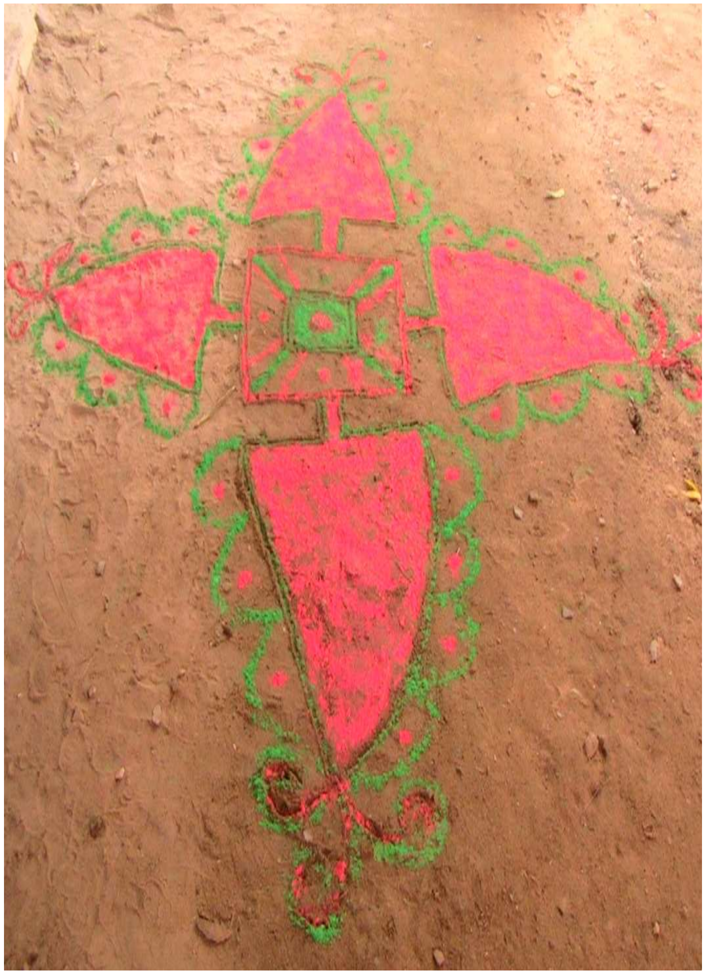

बदलाव के लिए गांव प्रोफाइल निर्माण

उद्देश्य

- कार्यक्रम को ध्यान में रखते हुए जेण्डर दृष्टि से बदलाव के बिन्दु चिहिन्त करना।

सामग्री

चार्ट, पेन, मार्कर।

समय

1 घण्टा

कार्यविधि

- महिला सशक्तीकरण कार्यक्रम के संदर्भ में सामाजिक सशक्तीकरण के लिए बदलाव के बिन्दुओं को सहभागियों की मदद से चिन्हित किया जाएगा यह अभ्यास छोटे समूहों में किया जाएगा व बड़े समूह में प्रस्तुतीकरण किया जाएगा।

प्रस्तुतीकरण में चिन्हित स्थितियों में जेण्डर दृष्टि से कैसे बदलाव लाया जा सकता है, पर चर्चा करना।

कार्य योजना निर्माण

उद्देश्य

- विभिन्न प्रपत्रों की मदद से गांव में कार्य योजना निर्माण करना।
- योजना के क्रियान्वयन हेतु की जाने वाली गतिविधियों पर समझ विकसित करना।

सामग्री

चार्ट, स्केच पेन, बोर्ड, मार्कर।

समय

2 घण्टे 30 मिनिट

कार्यविधि

- सहभागियों के साथ मिलकर बनाए गए प्रपत्र के आधार पर कार्य योजना बनाई जाएगी। यह कार्य छोटे समूहों में किया जाएगा।

योजना के बेहतर क्रियान्वयन हेतु सहभागियों के साथ विभिन्न गतिविधियों पर चर्चा कर समझ निर्मित की जाएगी।

प्रशिक्षण पश्चात् आंकलन

प्रशिक्षण से बनी समझ : निम्न बन्दु पर फीड बैक लेना।

- बदलाव
- विकास
- लीडरशिप
- प्रेरक की भूमिका
- गांव योजना निर्माण
- आगामी जरूरत
- सुझाव।

सामूहिक ऊर्जा का महत्व

उद्देश्य

- सामूहिक ऊर्जा व उसके असर पर समझ विकसित करना।

सामग्री

समय

1 घण्टा

कार्यविधि

- सामूहिक ऊर्जा के महत्व पर चर्चा करना।

सामूहिक ऊर्जा के लिए अभ्यास करते हुए पूरी बातचीत को समेकित करना।